भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 10 | उदयपुर गुरूवार 01 जून 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

कल्लाजी राठौड़ के सेवक श्री कन्हैयालालजी की करिश्माई सेवा

चित्तौड़ यों तो कईबार जाना हुआ मगर कल्लाजी राठौड़ की बुआ मीरांबाई के शोधानुसंधान को लेकर हमारी यात्रा सन् 1982 में 14-16 नवम्बर, 1984 में 8-9 नवम्बर तथा 1985 में 29-30 मई को हुई। ये यात्राएं लोकदेवता कल्लाजी के प्रमुख सेवक वलाद (अहमदाबाद) के काली कल्ला धाम के सेवक सरजुदासजी वैष्णव के साथ हुई।

श्री कल्लाजी राठौड़

इसी दौरान हमने दीवाली को किले पर लगने वाला भूतों का मेला, बैकुण्ठ चतुर्दशी को लगनेवाला दिव्य आत्माओं का मेला तथा हरियाली अमावस्या को लगनेवाला मेला भी देखा। प्रथम दोनों मेले रात्रि को भरते हैं। तीनों मेले रहस्यमय अलौकिक तथा अपने रंग के अजूबे हैं। इस पर मैंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लिखा जिनकी पूरे विश्व में चर्चा हुई।

बिड़ला धर्मशाला में रहकर किले पर मीरां से जुड़े उन सारे स्थानों तथा स्मारकों को देखा। वहां और भी स्मारक के रूप में जो महल, हवेलियां और दर्शनीय महत्त्व के स्थल हैं, उन्हें देखा। लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के दिव्य संरक्षण में उनके सेवक सरजुदासजी का सान्निध्य हमारे लिए वरदान सिद्ध हुआ। इन खोजों में डॉ. सुधा गुप्ता भी हमारे साथ थीं। वे तब राजकीय मीरां महाविद्यालय, उदयपुर में हिन्दी की प्राध्यापिका थीं।

सेवक श्री कन्हैयालालजी एवं सत्यनारायणजी वैष्णव (वैरागी)

चित्तौड़ के इन ऐतिहासिक स्थलों के रहस्य रोमांचों की चर्चा यत्र-तत्र सुनने को मिली। अध्ययन के दौरान लगा कि अभी तक जितना जो कुछ जाना गया है वह मात्र सूर्य की प्रथम किरण को देखना जितना ही है।

यहीं धर्मशाला में 30 मई 1985 को श्री कन्हैयालालजी सेवक हमारे सम्पर्क में आए जो पिछले तीस वर्षों से निरन्तर चित्तौड़ के किले से जुड़े विभिन्न देवी-देवताओं की सेवा-पूजा के कार्य में बड़ी निष्ठा और श्रद्धा से जुड़े हुए हैं। कन्हैयालालजी वैष्णव बड़े सरलमना साधक श्रद्धालू भक्त लगे। कोई आडम्बर-छलावा-दिखावा नहीं और

सत्यनारायणजी, कुलदीपजी, डॉ. भानावत तथा नारायणजी

न अपने कार्य की तूती बोलाना ही उनका अभीष्ट रहा। वे चुपचाप अपना काम करने में ही मगन लगे।

उन्होंने बताया कि वे प्रतिदिन दस स्थानों पर सेवा-पूजा करने जाते हैं। लाखोटिया बारी से लेकर ऊपर मीरां मन्दिर और कल्लाजी-जयमलजी की छतरी तक उनके पूजास्थल हैं। पूजा में अगरबत्ती लगाना, दीपक जलाना और पुष्प चढ़ाना तो है ही लेकिन विशिष्ट अवसरों पर वे प्रसाद-नारियल चढ़ाते हैं। यह सामग्री वे कहीं से मांगने-तांगने नहीं जाते। देवता अपनेआप ही यह सामग्री जुटवा देते हैं। कभी घी नहीं हुआ तो दीपक नहीं जलाता, केवल पानी चढ़ा देते हैं। भावना शुद्ध होनी चाहिए। पूजा के दौरान उन्हें कई अलौकिक चमत्कार देखने को मिले।

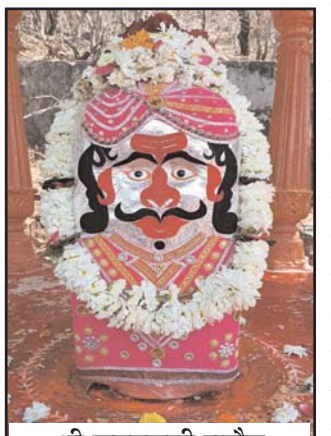

श्री जयमलजी राठौड़

लाखोटिया बारी में भैरूजी तथा महादेवजी की पूजा की जाती है। एकबार वहां शराब के नशे में दो कीर पहुंचे जो शिवजी की जड़ेली का पानी पीना चाहते थे। कन्हैयालालजी ने उन्हें बहुत समझाया वर वे नहीं मानें तब शिवजी ने उन्हें ऐसा आड़े हाथ लिया कि उनकी बहुत बुरी गत हुई और वे वहां से तत्काल भागते बने। यहीं कन्हैयालालजी ने एक हजार वर्ष का बूढ़ा नाग देखा। उसे उन्होंने जल चढ़ाया। एक पीला नाग भी देखा। महादेवजी की पूजा के समय एकबार शेरनी और उसके दो बच्चे आगये पर वे तनिक भी विचलित नहीं हुए और विस्मित हुए उन्हें निहारते रहे।

महासतियांजी तथा मीरां मन्दिर में भी उनकी सेवा चलती है। यहां वे दीपक जला माताजी की पूजा भी करते हैं। वीरवर जयमलजी तथा कल्लाजी राठौड़ की छतरी पर जाकर उन्हें पूजते हैं। जयमलजी की छतरी पर कईबार उन्होंने काले नाग के दर्शन किये। भीमकुण्ड घोड़ी के वहां एकबार ऐसा नाग प्रगटा जो लगातार 3-3 घण्टे दर्शन देता रहा।

कन्हैयालालजी ने बताया कि चित्तौड़ का सारा किला जागृत है। देवी-देवताओं की माया अपरम्पार है। उन तक कोई पहुंच नहीं सकता। चमत्कार ही चमत्कार है। ये तो सेवा-पूजा कर ही अपने जीवन को धन्य-पावन करते हैं।

कन्हैयालालजी ने बताया कि उनके मन मन्दिर में उठती लहरों में सारी भविष्यवाणी चलती रहती है। सबकुछ दिखाई देता है। वे कभी-कभी कुछ तंत्र-मंत्र और पाठ-जाप भी करते हैं। प्रतिदिन सात-आठ घण्टा उन्हें सेवा-पूजा में देना पड़ता है। यही उनका आत्मानन्द, मन की मौज तथा संतोष धन है। उनके दादाश्री गिरधारीदासजी थे।

19 मई 2023 को मेरे निवास पर महंत श्री कन्हैयालालजी वैष्णव के सुपुत्र श्री सत्यनारायणजी (58) मिलने आये। उनके साथ श्री कुलदीपजी तिवारी (41) तथा नारायणलालजी शर्मा (40) थे। कन्हैयालालजी के सन् 2002 में गोलोकवासी होने पर उनके सुपुत्र सत्यनारायणजी वैष्णव (वैरागी) कल्लाजी राठौड़ बावजी के गादीपति बने। अपने पिताश्री के चरण चिन्हों पर ये भी उन्हीं संस्कारों से ओतप्रोत देवताओं की बड़ी निष्ठा, आस्था और श्रद्धा-सेवा में आकण्ठ लगे हुए श्रद्धालुओं की समस्याओं का निराकरण कर जनभावनाओं के कल्लाजी के प्रति अडिग विश्वास को अखण्ड बनाये हुए हैं।

श्री कुलदीपजी तिवारी ने बताया कि किले की भैरव पोल और हनुमान पोल के मध्य बावजी कल्लाजी तथा जयमलजी राठौड़ की छतरियां बनी हुई हैं। इसलिए उन्हें छतरियां वाले बावजी कहते हैं। जयमलजी की 6 खंभों वाली छतरी है। पहले इसका निर्माण हुआ परन्तु वह ध्वस्त होगई फिर उन्होंने स्वप्न दिया कि पहले कल्लाजी की छतरी बनाई जाय। यही हुआ। कल्लाजी की छतरी पर 4 खंभे लिए है। कल्लाजी की छतरी के सामने ही अभयसिंहजी बावजी का स्थान है। अभयसिंहजी हाड़ौती नरेश थे और कल्लाजी की सेना के प्रधान सेनापति थे। वर्तमान में उनके सेवक नंदलालजी पारीक हैं जो बावजी अभयसिंहजी का भाव लिए हैं। मां नागाणाराय नागणेच्या और दुर्गामाता कल्लाजी-जयमलजी की कुलदेवी हैं।

श्री अभयसिंहजी बावजी

– म. भा.

भारत मदर ऑफ डेमोक्रेसी : मोदी

नई दिल्ली। 28 मई 2023 को नये संसद भवन के उद्घाटन तथा स्पीकर के आसन के ठीक सामने ऐतिहासिक राजदण्ड सेंगोल की स्थापना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की गई। इस ऐतिहासिक अवसर पर अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि यह सिर्फ एक भवन नहीं है। एक राष्ट्र के रूप में हम सभी के लिए 140 करोड़ का संकल्प ही इस संसद की प्राण-प्रतिष्ठा है। यहां होने वाला हर निर्णय ही आने वाले समय को संवारने वाला है। संसद की हर दीवार, इसका कण-कण गरीब के कल्याण के लिए समर्पित है। यह नया भवन भारत के सृजन का आधार बनेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राजाजी और आदिनम के संतों के मार्गदर्शन में यही सेंगोल सत्ता के हस्तांतरण का प्रतीक बना। जब भी इस संसद भवन में कार्यवाही शुरू होगी यह सेंगोल हम सभी को प्रेरणा देता रहेगा। भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र नहीं, बल्कि लोकतंत्र की जननी भी है। मदर ऑफ डेमोक्रेसी भी है। भारत आज वैश्विक लोकतंत्र का बहुत बड़ा आधार है। लोकतंत्र हमारे लिए सिर्फ एक व्यवस्था ही नहीं, एक संस्कार है। एक विचार है, एक परम्परा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि मुझे पिछले 9 साल में गरीबों के लिए चार करोड़ घर बनाने का संतोष है। हम जब इस भव्य इमारत को देखकर अपना सिर ऊंचा कर रहे हैं तो हम 9 साल में बने 11 करोड़ शौचालय को देखकर गर्व कर रहे हैं। हमने चार लाख किलोमीटर से ज्यादा सड़कों का निर्माण किया। हमने चार साल में अमृत सरोवरों का निर्माण किया। हमने 30,000 से ज्यादा पंचायत भवन भी बनाए हैं। यानी पंचायत भवन से लेकर संसद भवन तक हमारी निष्ठा एक ही है।

पोथीखाना

इतिहास को रेखांकन देते मौखिक स्त्रोत

डॉ. पूरन सहगल पिछले छह-सात दशक से भ्रमणशील खोजक दृष्टि लिए उन अनेक विधाओं पर लिख रहे हैं जो कागज पानड़ों से दूर रहीं। वे विद्वानों की बड़ी आंख बन गई हैं।

पुस्तक 'इतिहास के साक्षी मौखिक स्त्रोत' में डॉ. पूरन सहगल ने यह लिखकर सबकी, खासकर इतिहासवेत्ताओं की आंख ऊंची कर दी है कि मात्र पट्टे परवानों, शिलालेखों और रूक्के पानड़ों पर लिखित लेखन ही इतिहास नहीं होता। ऐसा इतिहास पूर्ण, परिपक्व और प्रामाणिक नहीं होता जब तक कि उनके साथ साक्षी देते मौखिक स्त्रोतों का झोल नहीं चढ़ता। इस दृष्टि से मौखिक स्त्रोतों का महत्त्व किसी चित्रफलक में रेखांकन की तरह प्रमुखता लिए होता है।

डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा ने पुस्तक के प्रारम्भ में ही यह टीप देकर सबको सचेत कर दिया कि इतिहास की देह में यदि कोई प्राणों का संचार करता है तो वह हमारा वाचिक लोकसाहित्य है। इतिहास में भले ही लोकसाहित्य न भी हो किन्तु लोकसाहित्य में इतिहास अवश्य होता है। इस दृष्टि से डॉ. पूरन सहगल लोकसाहित्य के ऐसे आराधक हैं जिन्होंने केवल मालवा ही नहीं, देश की सभी बोलियों और उनके लोकसाहित्य एवं उनमें निहित इतिहास के स्वर्ण-फूल लिखे हैं।

अपने 'प्रसंगवश' प्रारम्भिक पेरे-फेरे में ही डॉ. सहगल लिखते हैं- 'इतिहास के ऐसे अनेक मौखिक सन्दर्भ अभी भी हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम उन्हें समझें, जानें, गुनें और उनमें निहित इतिहास का शोध करें। अभी भी अनेक गीत, किवदंतियां, गाथाएं, कथाएं लोककण्ठों पर जीवित हैं। उन्हें सुनकर उनमें से इतिहास के सूत्र तलाशने होंगे।'

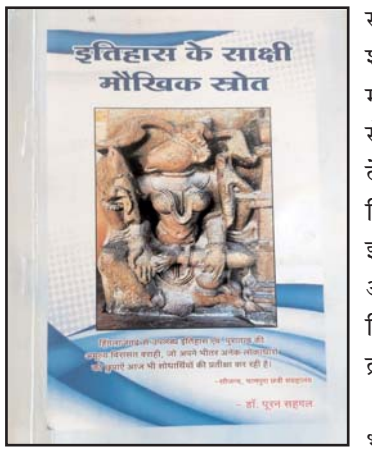

अपने इस कथन के सन्दर्भ में डॉ. सहगल ने विभिन्न शीर्षकों में प्रमुखत: (1) लोकसाहित्य और इतिहास के अन्त:सम्बन्ध (2) समाधियों, छत्रियों, कब्रों में दफन इतिहास (3) सिंगोलीगढ़ की राजकुमारी थी रानी पद्मिनी (4) लोकाख्यान में कालिदास (5) पश्चिमी मालवा में कर्नल जेम्स टॉड एवं अलेक्सेंडर कनिंघम के यात्रा विवरण (6) किवदंती पुरुष टंट्या भील (7) ऐतिहासिक विरासत अठाना पैलेस जैसे विषयों पर विद्वानों द्वारा जो ख्यात ग्रन्थ, आलेख, काव्य, गाथाजनित सामग्री प्रकाश में आई उसका शोधन करते लोकजीवन में जो मौखिक स्त्रोत विविध माध्यमों से प्रचलित हैं उनका उद्धरण देकर यह सिद्ध कर दिया है कि उनका लिखा वह लेखन इसीलिए सर्वमान्य नहीं होकर अनेक तरह की भ्रांतियां तथा विसंगतियां लिए है। उदाहरण द्रष्टव्य है-

किवदंती पुरुष टंट्या भील पर इतिहास के पन्ने बहुत अधिक नहीं कह पाये पर डॉ. सहगल ने अपने द्वारा संग्रहीत अनेक लोक कण्ठासीन स्त्रोतों द्वारा उनका प्रभाव क्षेत्र होशंगाबाद, भीलवाड़ा एवं होल्कर राज्य तक माना। तांत्या टोपे ने टंट्या के प्रभाव से प्रभावित हो अपना हमसाथी बनाया। दोनों छापामार युद्धों की अतुलनीय करतूतों के किवदंती ही बने रहे किन्तु अपने ही साथियों के विश्वासघात के शिकार हुए। (पृ. 78)

सिंगोली की राजकुमारी थी पद्मिनी में डॉ. सहगल लिखते हैं- 'जायसी ने पद्मावत की रचना आयु के 27वें, 30वें वर्ष में कर 70-77 वर्ष में पूर्ण की। वे एक आंख से न देखने व एक कान से न सुन पाने वाले बीमार असक्त सूफी सन्त थे। उन्होंने अमेठी के बाहर की यात्रा बहुत कम की। चित्तौड़ तो देखा ही नहीं।

पद्मिनी जहां से गुजरती, हवा में कमल जैसी सुगंध फैल जाती थी इसीलिए उसे 'पद्मण' कहते थे।

वह अरावली पठार पर स्थित मेवाड़ और दशपुर जनपद (मालवा) की सीमा वाले सिंगोली (सिंघेली-सिंहलगढ़) की गौर वंशीय राजकुमारी थी। सिंहलद्वीप (सीलोन-लंका) की तो वह कदापि नहीं थी।'

ऐसे अनेक प्रसंग हैं। आशा है, इतिहासज्ञ इन स्त्रोतों पर गौर कर इन्हें प्रामाणिकता की कसौटी देते इतिहास का पुनर्लेखन पर्यालोचन करेंगे। अखिल भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, ग्वालियर से प्रकाशित 118 पृष्ठीय इस मूल्यवान पुस्तक की कीमत 200 रूपये है।

-डॉ. तुक्तक भानावत

डॉ. सहगल के संपर्क नं. 9424041310

संवेदनशील रचनाधर्म को दर्शाता प्रेरक उपन्यास

'मैं बाबा का कान्हा' ख्यात लेखिका नीलिमा गुप्ता का तीसरा उपन्यास है। इससे पूर्व वे 'मैं हूं सीता' तथा 'मैं कृष्ण सखी' लिख सामाजिकों में अपने लेखन का श्रेष्ठत्व दर्ज करा चुकी हैं।

पुस्तक के फ्लैप पर रामचरण राग ने प्रस्तुत उपन्यास को आस्था का अखण्ड यथार्थ कहते सटीक लिखा- ''बहुश्रुत और बहुचर्चित पौराणिक कथाओं व उनके पात्रों को लेकर आधुनिक सन्दर्भों में उनके पुनर्पाठ की एक परम्परा विगत वर्षों में हिन्दी साहित्य में विकसित हुई है। प्राय: देखने में आया है कि वर्तमान में रचनाकारों की दृष्टि बहुप्रचारित कथाओं तथा ख्यात आक्तारीय धारणाओं से युक्त व्यक्तित्वों के सन्दर्भ में ही ठहरी हुई रही है लेकिन कुछ बहुत थोड़े से रचनाकार ही इन कथाओं के प्राय: उपेक्षित पात्रों के रूप में नया खोजने की दृष्टि लेकर इन पौराणिक कथाओं के खजाने से उनके मानवीय संघर्षों और उनके उदात्त चरित्रों को एक अन्वेषक की भांति उनकी पुनर्व्याख्या कर उनकी महत्ता को स्थापित करने के लिए एक मुहिम छेड़े हुए हैं।

वरिष्ठ कथा लेखिका श्रीमती नीलिमा गुप्ता ऐसी ही दृष्टि सम्पन्न साहित्यकार हैं, जो हमारी पौराणिक कथाओं में प्राय: उपेक्षित पात्र के रूप में दर्शाए गए पात्रों की उलब्ध संक्षिप्त जीवन-कथाओं का मंथन कर उनसे अपने समय की जड़ों को सिंचित करने के लिए स्वयं अमृत का सृजन कर लेती हैं।''

उपन्यास की प्रतीति के अनुसार कृष्ण का सारा जीवन बचपन से बहुत आगे तक नन्दबाबा की विशेषताओं के परिदृश्य में चलचित्र-सा चलता है। मानो कृष्ण नन्दबाबा की परछाई ही हो। कल्पना निर्मित यथार्थ से, भावना-संवेदनाओं से भरा जिस साधना के आलोक में हमें ले जाता है, कहना होगा कि नन्दबाबा की सोच, प्रक्रिया दार्शनिकता से भरी है। उनकी

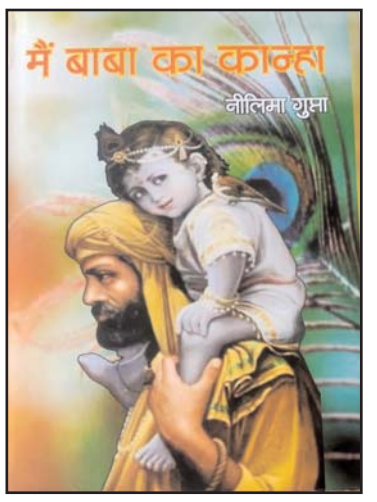

यह संचेतना लेखिका ने सामंजस्यपूर्ण वातावरण में यूं निर्मित की है कि नन्दबाबा के गहरे विचार कृष्ण के जीवन का अध्याय बन चुके हैं। मैंने बाबा जैसे एक अराजनीतिक, योजना बनाकर व्यक्ति को कर्म कार्य करते और सफल होते देखा हो। कृष्ण मानते हैं कि उनके व्यक्तित्व का विस्तार नन्दबाबा के गुणों से ही हुआ। वैचारिक बदलाव के पक्षधर नन्दबाबा की सम्पूर्णता को क्या खूब निखारा है नीलिमा गुप्ताजी की कलम ने। इन्द्रपूजा के स्थान पर गोवर्धनपूजा के सन्दर्भ में लिखा है। एक छोटे नादान उम्र के बालक की सनातन से चली आ रही प्रथा के विरूद्ध सबसे जुदा राय देकर भी पुरानी लीक से तोड़ना बाबा के ही बस की बात थी।

एक अन्य भावपूर्ण पड़ाव है नन्द-वासुदेव की मैत्री। एक-दूसरे पर विश्वास, आस्था इस रचनाकर्म को ज्यादा बल प्रदान करते हैं। अनेक उपादानों, योजनाओं, धर्मों और मानवीय मूल्यों संग समाज में फैली नफरत, हिंसा एवं कुरीतियों पर प्रहार करके नन्दबाबा के विशिष्ट आचरण के स्वर्णाक्षरों से सुसज्जित किया है। इतना ही नहीं प्रकृति, पशुधन के प्रति प्रेम देखकर पाठक सहज ही कह उठेगा, यह क्रान्ति जीवन का कथानक है। सम्पूर्ण चारित्रिक विकास की महायात्रा है। जीवनगाथा है। चेतना है। समर्पित भावों का संसार है।

यह उपन्यास जन आत्मकेन्द्रित होकर पढ़ा जायेगा। जनमानस के लिए एक सम्पूर्ण सामंजस्य बैठाती हुई कथा बार-बार पाठक मन में जिज्ञासा उत्पन्न करेगी कि अब आगे क्या। यह कहते हुए, लिखते हुए अर्थ महसूस हो रहा है कि सोपानों से, आयामों से सम्बन्ध रखनेवाला ये उपन्यास अपने सम्वादों के माध्यम से अपनेआप में बेजोड़ है।

लेखिका ने संगठन शक्ति में विश्वास करना, संचालित करना भी कृष्ण के जीवन का एक परम अध्याय रेखांकित किया है ताकि सभी की जीवन की रक्षा हो सके। कल्याणकारी और जनभावनाओं के प्रति ईमानदार, प्रतिबद्ध सोच कृष्ण के ही बूते की बात है।

कहना होगा कि लोक के जीवनदर्शन को समेटे अमूल्य विचारों का एक साकार रूप है, 'मैं बाबा का कान्हा' शब्द-दर-शब्द सुगम भाषा में रचा गया उपन्यास एक मील का पत्थर साबित होगा। दृष्टि प्रकाशन, 86 / 189, प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित सजिल्द यह कृति 390 रूपये की है।

-डॉ. अंजना अनिल

-लेखिका डॉ. नीलिमा गुप्ता के सम्पर्क नं. 9413739257

फेंफड़े की जटिल बीमारी का सफल उपचार

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पिम्स) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने वृद्ध महिला के फेंफड़े की जटिल बीमारी का सफल उपचार किया है।

चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि पिछलों दिनों पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा के रेस्पिरेटरी मेडिसिन ओपीडी में 64 वर्षीया महिला को सांस लेने, कफ के साथ खांसी, भूख कम लगना, वजन कम होना की शिकायत के चलते भर्ती कराया गया। जांच में पता चला कि महिला को उच्च रक्तचाप और मधुमेह भी है। सीटी स्कैन में महिला के दाहिने फेंफड़े में गांठ का पता चला। हड्डियों में लिटिक के साथ स्क्लेरोटिक घाव थे जो कैंसर फेंफड़े के मेटास्टेसिस का संकेत था। इसके बाद ब्रोंकोस्कोपी कर विभिन्न जांचों के लिए सैंपल भेजे गए थे। सीटी गाइडेड बायोप्सी तथा हड्डी की बायोप्सी की गई। मामले को फेफड़े के एडेनोकार्सिनोमा के रूप में फुफ्फुसीय माइकोसिस के साथ दाहिने फेफड़े के अंतर्निहित पतन के साथ सकल दाएं तरफ फुफ्फुस बहाव के रूप में निदान किया गया था जो एक दुर्लभ स्थिति है। रोगी की एंटी फंगल थेरेपी शुरू की गई और फेंफड़े के कैंसर के आगे के प्रबंधन के लिए ऑन्कोलॉजी विभाग में भेजा गया। मरीज का इलाज पिम्स के श्वसन रोग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वाहब मिर्जा, डॉ. सानिध्य टांक व उनकी टीम के सदस्य डॉ. टी. कुशलकुमार, डॉ. ऋषभ अग्रवाल, डॉ. कुमार प्रान्शु, डॉ. गुरमेहरसिंह ठेठी, डॉ. अर्पित जोहर एवं टेक्निशियन गिरिराज ने किया।

ट्रक ड्राइवर्स को तम्बाकू के प्रति किया जागरूक

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक डेंटल कॉलेज देबारी के जन स्वास्थ्य दंत चिकित्सा विभाग द्वारा विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में बुधवार को ट्रांस्पोर्ट नगर, प्रतापनगर में ट्रक ड्राइवर्स के लिए तम्बाकू निषेध गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस दौरान तरह-तरह पोस्टरों एवं जागरूकता सामग्री से आमजन को तम्बाकू के दुष्प्रभावों के साथ ही ट्रक ड्राइवर्स को जागरूक कर व्यसन मुक्ति की शपथ दिलाकर समाज को तम्बाकू मुक्त बनाने का संकल्प लिया। इसके अतिरिक्त पेसिफिक डेन्टल हॉस्पिटल में आने वाले मरीजों के लिए तम्बाकू निषेध से सम्बंधित प्रदर्शनी लगाई। जागरूकता पेम्पलेट्स वितरित किये गए। इस मौके पर डॉ. भगवानदास राय, डॉ. कैलाश असावा एवं डॉ. मृदुला टांक सहित अन्य दंत चिकित्सक मौजूद थे।

स्मृतियों के शिखर (165) : डॉ. महेन्द्र भानावत

चिड़ावी ख्यालों के सरताज ही थे दूलिया राणा

चिड़ावा निवासी नानूराणा ने चिड़ावी ख्यालों को जन्म दिया। वे संस्कृत, हिन्दी, डिंगल, पिंगल के अच्छे पंडित थे। वे संवत् 1873 में जन्मे और 85 वर्ष की अवस्था तक ख्याल-जगत की सेवा करते रहे। उन्होंने 36 के करीब ख्याल लिखे। दूहा, लावणी, शेर, झड़, दुबोला, चौबोला, कवित्त, कड़ा आदि लोकप्रिय छन्दों की दृष्टि से उनका बड़ा प्रचार हुआ। हजारों की संख्या में उनकी पुस्तकें बिकीं।

कहीं देखा ऐसा कलाकार

स्वभाव से नानू बड़े मौजी, दिलेर और फक्कड़बाज तबीयत के थे। तत्कालीन सेठ-साहूकारों पर उनका जबर्दस्त प्रभाव था। वे ख्यालों में बड़ा जनाना बनते थे। उनके जीवनकाल में पैसा और प्रसिद्धि दोनों ही उनके बेरी रहे। उनके पूर्वज मूलत: जयपुर के थे जो बाद में मंडावरा और फिर चिड़ावा आकर बस गये। दूलिया राणा उन्हीं नानू के भीतीजे थे। हरपतराम, शिवबक्षराम, घनश्यामदास तथा गोविन्दराम उनके नृत्य-संगीत तथा रचनाधर्मी पक्षों के गुरु थे।

चिड़ावी ख्याल कथानक प्रधान नहीं होकर कथोपकथन प्रधान होते हैं। उनमें शास्त्रीय रागों की रंगतों का वैशिष्ट्य पाया जाता है। सोरठ, देश, जोगिया, कालिंगड़ा, भैरवी, काफी, विहाग, खमाज आदि रागें लोक रागों के अनुकूल ढलती हुई सहज बन्दिशों में प्रयुक्त होती हैं। दोहे भी इन ख्यालों में विशिष्ट तालों में गाये जाते हैं। इनका नृत्य बड़ा विशिष्ट, कठिन और क्लिष्ट होता है। गायकी तथा मुख्य अदायगी की प्रमुखता के कारण वेशभूषा तथा कलात्मक सज्जा पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। मंच साधारण होता है। तीन ओर जनता बैठी रहती है।

अपनी शोधयात्रा के दौरान मैंने देखा, चिड़ावा का पूरा क्षेत्र ही दूलियाजी को बड़ी श्रद्धा-आस्था से देखता है। लोगों को गर्व है कि दूलियाजी जैसा खिलाड़ी उनके क्षेत्र का है। कई संस्मरण, प्रदर्शन और उनके जीवन-दर्शन की बातें लोगों ने मुझे सुनाईं। कइयों ने तो उनके ख्यालों की मुख्य-प्रमुख धुनें, नृत्य-चालें और अभिनय की अदायगी तक साक्षात् कर दीं। सत्तर बरस का दूलिया राणी बनकर जो कमाल दिखाता है कि सतरा बरस की सुन्दरी भी उनके सामने पानी भरती नजर आती है।

यहां मुझे दूलिया राणा के सम्बन्ध में भारतीय लोककला मण्डल के संस्थापक-संचालक देवीलालजी सामर का लिखा वह अलौकिक संस्मरण याद आ रहा है जब वे पहलीबार दूलिया राणा से उन्हीं के क्षेत्र झुंझुनूं शेखावाटी में मिले। उसी क्षेत्र में एक ओर सामरजी अपने कलादल के साथ 'ढोलामारू' नृत्यनाटिका का प्रदर्शन कर रहे थे तो दूसरी ओर प्रदर्शन के दौरान ही उन्हें दूलिया राणा का अपनी मण्डली द्वारा प्रस्तुत पारम्परिक ख्याल ढोलामारू की स्वरलहरियां बेचैन किये जा रही थी।

सामरजी ने इस घटना प्रसंग का मेरे शोधप्रबन्ध 'लोकनाट्य : परम्परा और प्रवृत्तियां' के अनुवचन में बड़ा ही रोमांचक उल्लेख किया है। यह ग्रन्थ सन् 1971-72 में बाफना प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर से प्रकाशित हुआ किन्तु वर्षों पूर्व से ही यह अनुपलब्ध है। सामरजी ने लिखा-

राजस्थान की सुप्रसिद्ध नगरी झुंझुनूं की बात है। मैं सन् 1954 में अपने प्रसिद्ध लोकनाट्य 'ढोलामारू' को लेकर इस नगरी में पहुंचा। उस समय भारतीय लोककला मण्डल का शैशवकाल था परन्तु इस मनोमुग्धकारी नृत्यनाटिका के कारण उसने प्रारम्भ में ही प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। 'ढोलामारू' की रचना से पूर्व मैंने राजस्थान की प्राय: सभी लोकनाट्य विधाओं का परिचय प्राप्त कर लिया था। उसी अनुभव के आधार पर ढोलामारू की रचना हुई। गायक, वादक आदि भी परम्परा-पोषक ही थे और नाटिका में भी परम्परा की रक्षा पर्याप्त मात्रा में हुई। कथा, गीत, नृत्य, प्रसंग आदि की दृष्टि से समस्त नाट्य पूर्णरूप से कसा हुआ था। झुंझुनूं से पूर्व यह नाटिका दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, जयपुर, जोधपुर, इन्दौर, नागपुर, पूना, मद्रास, बैंगलोर आदि शहरों में धूम मचा चुकी थी परन्तु झुंझुनूं में आकर हमें जो अनुभव हुआ वह विशेष उल्लेखनीय है।

'ढोलामारू' के समस्त गीत एवं उनकी धुनें पारम्परिक थीं। प्रस्तुतीकरण एवं पात्रों की नाट्य अदायगी भी परम्परा से बहुत दूर नहीं थी। नायक की भूमिका स्वयं मैं ही अदा कर रहा था। इसका खेल झुंझुनूं कॉलेज के विशाल चबूतरे पर सम्पन्न हुआ। आज की तरह पहले भी हम अपने ख्यालों को पारम्परिक ढंग से ही प्रस्तुत करते थे। बिजली तथा माइक का उपयोग अवश्य करते थे परन्तु रंगमंच के अन्य आधुनिक उपकरणों को हम अपने से कोसों दूर रखते थे। देश के बड़े-बड़े शहरों में राजस्थानी लोकनाट्यों के इस परिष्कृत रूप ने अच्छी छाप छोड़ी थी, परन्तु झुंझुनूं में आकर जो अनुभव मुझे हुआ उसने मुझे लोकनाट्यों में गहराई से प्रविष्ट होने की एक अर्न्तदृष्टि दी जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता।

रात्रि आठ बजे मीठी-मीठी सर्दी के बीच खुले मैदान में ही खेल शुरू हुआ। मैं ढोला की भूमिका में भव्य पोशाक पहिने हुआ था और ऐतिहासिक दृष्टि से भी मेरी वेशभूषा में किसी प्रकार का दोष नहीं था। मैं ऊपर अट्टालिका पर चढ़कर मारवण के यहां से पठाये ढाढ़ियों की अगवानी का अवलोकन कर रहा था। उसी समय सुदूर किसी क्षेत्र से मेरे कानों में ढोलामारू की सुमधुर स्वरलहरियां रस बरसाने लगीं। मुझे यह भान नहीं हुआ कि यह रहस्यमयी घटना कैसे घटित हुई। गीत वैसे ही थे जैसे हमारे गायक गा रहे थे और अभिनेता भी नक्काड़ों की ताल पर वे ही तोड़े-टुकड़े नाच रहे थे जो हमारे कलाकार नाच रहे थे।

कुछ क्षण मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह अनुभव वास्तविक है या भेरे अन्तर्तम से उपजी हुई कोई स्वप्निल अनुभूति? मैं जब अटारी से नीचे उतर कर मूल रंगमंच पर आया तब भी वे रस में डूबी हुई ध्वनियां मेरे कानों में गूंज रही थीं। मैं इतना अनमना हो गया कि मुझसे अपना शेष अभिनय ठीक से नहीं बन पड़ा। मैं प्रसंगवश पुन: अट्टालिका पर पहुंचा तो वे ही ध्वनियां मुझे पुन: मर्महित करती रहीं। जैसे-तैसे हमारा प्रदर्शन समाप्त हुआ। दर्शकों से विदा ली गई परन्तु अपनी छटपटाहट मैं ही जानता था।

झुंझुनूं के जिलाधीश विष्णुदत्तजी को पहले से मालूम था कि शेखावाटी के सुप्रसिद्ध नाट्य-अभिनेता श्रीयुत दूलिया राणा का खेल यहां से छह मील दूर एक गांव में चल रहा है जिसकी इजाजत उन्होंने कुछ ही दिन पूर्व दी थी। मैंने उनसे कहा कि इन स्वर लहरियों से आप प्रभावित नहीं हो रहे हैं? उन्होंने कहा कि यदि इन देहाती नाटकों से हमें पर्याप्त मात्रा में मनोरंजन उपलब्ध होता है तो हम इतना खर्चा करके आपकी मण्डली को यहां क्यों बुलाते? जितना धन हम आपके एक खेल पर खर्च कर रहे हैं उतनी ही राशि में हम दूलिया राणा के खेल महीने भर तक देख सकते थे।

इन बातों से मेरे दिल पर गहरी चोट लगी परन्तु मैं उनसे कैसे कहता कि इन धुनों पर मैं बिक भी जाऊं तो भी उनकी कीमत अदा नहीं कर सकता। उस समय तक वह प्रदर्शन चल ही रहा था। ऐसे खेल शाम को शुरू होते हैं तथा सुबह तक चलते रहते हैं। मैंने उनसे कहा कि मुझे अतिशीघ्र ही वहां पहुंचवा दें। जो प्रसंग इस समय चल रहा है उसे मुझे अवश्य ही देखना है। मैंने उतावली में अपनी पोशाक भी नहीं उतारी और अपने कुछ साथियों के साथ जीप में बैठकर प्रदर्शन-स्थल पर पहुंच गया।

उस समय मारवण का विरह पक्ष चल रहा था और वह अटारी पर चढ़ कर अपने प्रियतम की बाट जोह रही थी। मेरी जीप पहुंची तो कुछ क्षण तक वह खेल रूक गया। दूलिया राणा को पहले से मालूम था कि सामरजी अपनी मण्डली के साथ झुंझुनूं आये हुए हैं। दूलिया उस समय मारवण की भूमिका अदा कर रहे थे तथा चेहरा उनका घूंघट

नृत्य कला की कीर्ति चूमता अनहोना कलाकार

से ढका हुआ था। उन्होंने रूपया नारियल से मेरा अभिवादन किया और चलते प्रदर्शन में रंगमंच से उतरकर मुझे गले लगा लिया।

मेरी आंखों से खुशी के आंसू निकल पड़े और मैं नतमस्तक हो गया। मैं दूलिया राणा के बारे में पहले से बहुत कुछ सुन चुका था। उनके गुरु नानू राणा का मैं सदा ही भक्त रहा हूं। उनके प्राय: सभी नाटक मैं पढ़ चुका था और एक-दो का रंगमंचीय प्रयोग भी कर चुका था। उस समय तक मैं अपनी पुस्तकों एवं लेखों में नानू-दूलिया के अनेक उल्लेख भी कर चुका था।

दूलिया कहने लगे कि मैं आज आपके दर्शन करके धन्य हुआ और मैंने कहा कि मैं जन्म-जन्मान्तर तक इस मिलन की मधुर स्मृतियां नहीं भूलूंगा। दूलिया उस समय लगभग पैंतालीस वर्ष के थे। घनी भरी काली दाढ़ी, जो घूंघट में ढक जाने के बाद किसी की कल्पना में नहीं समा सकती थी। पुन: खेल चालू हुआ। दूलिया ने अपने पदचापों से बिजलियां चमकानी प्रारम्भ कर दीं। उनके कण्ठ से जो स्वर निकल रहे थे वे आसमान को छू रहे थे। जनता झूम रही थी। नक्काड़ेवाला पसीना-पसीना हो रहा था। टेरिये गला फाड़कर टेरें लगा रहे थे। समा बंध गया। मैं झूमता ही रह गया। होश-हवास मेरे गायब थे। अर्धचेतना में मैं अपनी जीप की सीट पर लुढ़क-सा गया। खेल थोड़ी देर रूक गया। मैं चैतन्य अवस्था में आया। दूलियाजी से कहने लगा, मैं धन्य हुआ। मेरी अन्तर्दृष्टि जागृत हुई। राजस्थानी ख्याल को आज मैंने सही रूप में देखा। मैं यह उपकार कभी नहीं भूलूंगा।

दूलियाजी से मेरी मिलने की इच्छा पूरी हुई 1968 के मार्च महीने में जब राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने उदयपुर के भारतीय लोककला मण्डल के तत्वावधान में लोकनाट्य समारोह आयोजित किया। इस समारोह में दूलियाजी को उनके दल सहित आमंत्रित किया गया। दूलियाजी अपने ग्यारह कलाकारों के दल के साथ आये थे। दल में प्राय: सभी लोग उन्हीं के परिवार के थे। दूलियाजी का जोर-शोर से प्रचार किया गया। रात को लोगों की जो भीड़ उमड़ पड़ी वह कल्पनातीत थी।

उस रात दूलियाजी का प्रदर्शन देखकर मुझे इतना सन्तोष-सुख मिला जितना किसी यात्री को तीर्थयात्रा करने के बाद होता है। मैं ही नहीं, जिन लोगों ने भी उस दिन दूलियाजी को मंच पर देखा, आज भी दूलियाजी की छवि मेरी आंखों में उसी तरह तैरती मिलती है जैसे कल की ही घटना हो।''

(पृ. 1-3)

इस समारोह में केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी के सचिव डॉ. सुरेश अवस्थी भी आये हुए थे। उन्हीं की अध्यक्षता में तब लोकनाट्यों पर मेरे संयोजन में संगोष्ठी आयोजित की गई। डॉ. अवस्थी को दूलियाजी तथा उनके पोते बंशी-बनारसी का खेल इतना अधिक पसन्द आया कि उन्होंने इनके दल को दिल्ली में अकादमी की ओर से आमंत्रित किया और प्रदर्शन करवाया तब पत्र-पत्रिकाओं में यह दल बड़ा चर्चित रहा। ख्याल जगत में दूलियाजी की अप्रतिम सेवाओं के फलस्वरूप राजस्थान संगीत नाटक अकादमी की ओर से मुख्यमंत्री बरकतुल्ला खां ने एक विशिष्ट समारोह में सम्मानित किया।

आज जब देखता हूं तो लोकनाट्यों की वह परम्परा जो किसी समय विभिन्न अंचलों में परवान पर थी, वीरान-सी लगती है। अब न चिड़ावी ख्यालों के सरताज नानू दूलिया राणा रहा न मारवाड़ी ख्यालों के शिखर पुरुष उगमराज। न किशनगढ़ी ख्यालों के कीर्ति पुरुष बंशीधर शर्मा रहे न रम्मती ख्यालों के स्वराज्य आन्दोलन के अग्रणी तेजस्वी पूत तेजकवि। न जयपुरी तमाशा के गौरव-गर्व गोपीकृष्ण भट्ट रहे और न तुर्रा के चैतन्य चितेरे चैनराम तथा कलंगी के करिश्मे खाजूखां उस्ताद।

न कुचामणी ख्यालों के लाभशुभ लच्छीराम रहे न शेखावाटी के झालीराम प्रहलादीराम पुरोहित। न बीकानेरी रम्मतों के नामचीन खिलाड़ी नन्दूसा रहे न कठपुतली के अन्तिम खेल अमरसिंह राठौड़ को जीवन्त किये नागौर क्षेत्र के जीजोट गांव के नत्थू भाट (नाथू भाट) और गुड़ली के रासधारी ख्याल के गंगाराम और गंधर्वों के खेल प्रस्तुत करने वाले गणेशीलाल। अब तो उनकी प्रस्तुति तो दूर उनके सम्बन्ध में पुख्ती जानकारी देने वाले भी शायद ही कहीं मिलें।

लेकिन मेरा यह सौभाग्य रहा कि मैं राजस्थान के उन सभी क्षेत्रों में घूमा और मैंने विविध ख्याल-मण्डलियों के नायकों, प्रमुख कलाकारों, उस्तादों तथा सम्बन्धित विद्वानों से भेंट कर प्रदर्शनधर्मी कलारूपों पर विस्तृत जानकारी कलमबद्ध कर सका। विभिन्न उस्ताद, लेखकों की लिखी दो सौ से अधिक ख्याल पुस्तकें भी मेरे संग्रह में मौजूद हैं जो मैंने राजस्थान में लगने वाले मेलों तथा प्रकाशकों से प्राप्त कीं।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 01 जून 2023

सम्पादकीय

अथ पाण्डुलिपि प्रकरणम्

साहित्य की किसी विधा पर लेखक द्वारा जो कृति तैयार की जाती है, वह पाण्डुलिपि कहलाती है। यह अप्रकाशित होती है। यह हाथ की लिखी होती है। इसे मैन्युस्क्रिप्ट कहते हैं।

लेखक द्वारा तैयार की गई ऐसी अनेक पाण्डुलिपियों के बारे में अनेक तरह की घटनाएं सुनने को मिलती हैं। एक लेखक के अनुसार उन्होंने अपनी एक पाण्डुलिपि तैयार कर किसी प्रकाशक को प्रकाशनार्थ दी। उसने बड़े सम्मानपूर्वक उसे प्रकाशित तो करदी परन्तु उसकी एक फोटो प्रति अपने शोकेस में सजाकर रखदी।

उन्हीं दिनों एक दूसरा प्रकाशक वहां आया जिसने उस शोकेस में वह पाण्डुलिपि देखी जो प्रसिद्ध लेखक की होने से उसका जी ललचाया और किसी प्रकार उसे गायब करदी। उसे यह नहीं पता था कि इसका प्रकाशन हाल ही में हो चुका है। उसने आननफानन में उसका प्रकाशन कर रिलीज करदी।

जब मुख्य प्रकाशक को इसका पता चला तो उसने इस प्रकाशक को अदालत में घसीट दिया कि यह पुस्तक सप्ताह भर पहले ही उसने प्रकाशित की है और मूल पाण्डुलिपि भी उसके पास सुरक्षित है। अदालत में यह केस चला और बतौर एक लाख रूपया दूसरे प्रकाशक को देना पड़ा।

दूसरी घटना भिन्न तरह की है। उसके अनुसार एक लेखक ने अपनी पाण्डुलिपि प्रकाशक को छपने भेजी। कुछ दिनों बाद उससे कहा गया कि पाण्डुलिपि प्रकाशन योग्य है पर इसे आप पांच हजार रूपये में हमें देदें। इसके लेखक की जगह हम किसी और लेखक का नाम देना चाहेंगे। उस समय पांच हजार रूपया एक बड़ी रकम थी लेकिन उस लेखक ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। कोई चालीस वर्ष पुरानी यह घटना है पर वह पाण्डुलिपि अभी तक नहीं छप पाई।

तीसरी घटना तो बहुत ही मजेदार अजीब है। साहित्य की एक अकादमी ने तो एकबार आव देखा न ताव, पाण्डुलिपि पर ही अपना सर्वोच्च पुरस्कार दे दिया। इस पर अच्छी प्रतिक्रिया नहीं हुई। नतीजतन अकादमी को अपना निर्णय आगे के लिए बदलना पड़ा।

इस तरह के अनेक घटना-प्रसंग हैं। ऐसे तो अनेक उदाहरण हैं जहां पाण्डुलिपि कोई तैयार कर रहा है, छाप कोई रहा है और नाम किसी और का लग रहा है। इन सबमें मनुष्य की ही भूमिका अहम है। उसी को यह सोचना और समझना पड़ेगा कि उसे क्या करना है जो अच्छा, ईमानदार और उत्कृष्ट है।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने तो 1980 में प्रकाशित कविता पुस्तक 'कोई-कोई औरत' में पहली कविता ही पाण्डुलिपि पर दी है। वे लिखते हैं-

पाण्डुलिपि तैयार करते-करते कुंवारा रह गया
प्रेस में न मालूम कब जायेगी
जायेगी भी कि नहीं
कब कंपोज होगा एक-एक अक्षर
मशीन पर कब चढ़ेगा मेटर
कब फर्मे जमेंगे
चिपकेगा कवर
किताब कब आयेगी हाथ में
क्या मेरा ही नाम होगा उस पर
कौन करेगा विमोचन
सारा समय यों ही बह गया
पाण्डुलिपि करते-करते कुंवारा रह गया।

इसकी भूमिका डॉ. प्रभाकर माचवे ने लिखी। उल्लेखनीय पक्ष यह है कि बम्बई की एक संस्था द्वारा भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट कृति के रूप में यह पुस्तक पुरस्कृत हुई।

समलैंगिकता कुत्सित प्रयास : मुनि संबोधकुमार

उदयपुर (ह. सं.)। बीएन संस्थान में समलैंगिकता पर विचार गोष्ठी आयोजित हुई। मुख्य वक्ता मुनि संबोधकुमार ने कहा कि समलैंगिकता सनातन संस्कृति की पवित्रता को नष्ट करने का कुत्सित प्रयास है। इसके विरोध में पूरे देश के नागरिकों को आन्दोलन करना चाहिए। 18 से 35 वर्ष के बाद भोग संस्कृति में ऐसे समलैंगिक जोड़ों का क्या हश्र होगा। इसका अध्ययन विदेशों से जानना चाहिए। वे लोग नारकीय जीवन जी रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि बीएन विवि के सचिव महेन्द्रसिंह आगरिया ने इसे मानवता के पतन की प्रथम सीढ़ी बताया। रिटायर्ड लेफ्टिनेंट जनरल एन. के. सिंह ने कहा कि किसी भी व्यक्ति के व्यक्तिगत विचार सारे समाज पर नहीं थोपे जा सकते। गोष्ठी में डॉ. प्रदीप कुमावत, पुरुषोत्तम शर्मा, रमन सूद तथा किशोर पाहुजा ने भी विचार व्यक्त किये।

नन्दवाना बोहरा में तीन फेरे पानी की साक्षी में

-डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना-

ब्राह्मणों की अनेक उपजातियों में एक नान्दीमुख या नन्दवाना है। इनमें भी प्रान्त, क्षेत्र से भेद हैं। प्राचीन ग्रन्थों में पुराण जो 18 हैं उनके भी उप पुराण हैं। नान्दीपुराण ऐसा ही उपपुराण है जिसमें इस जाति की उत्पत्ति व विकास का वर्णन है। नान्दीपुराण कहता है कि नान्दीमुख (नन्दवाना) नन्दी ऋषि की सन्तान है जिसने ब्रह्मा का यज्ञ सम्पन्न कराया था।

जगतगुरु शंकराचार्य नन्दवाना को पंच द्रविड ब्राह्मणों में मानते हैं। कुछ विद्वान पंच गौडीय ब्राह्मणों में सम्मिलित करते हैं। नन्दीवर्धनपुर से उत्तराखण्ड के नान्दी ग्राम से निकले। ये पित्रेसुर यज्ञ, नान्दीमुख श्राद्ध, हवन आदि करते। किसी से दान-दक्षिणा नहीं लेते। किसी का छुआ ग्रहण नहीं करते। सगौत्री विवाह नहीं होते।

एक प्रसंग के अनुसार कृष्ण रूक्मणी विवाह में नन्द ब्राह्मण रूक्मणी का सन्देश लेकर जाता है तथा कृष्ण का विवाह होता है। उस ब्राह्मण के वंशज नान्दीमुख या नन्दवाण कहलाये। रूक्मणी ने कहा था कि आप लोगों को किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मुगलों के हमलों या राजाओं के पारस्परिक द्वेष से ये शहर छोड़ते रहे। खानाबदोश भी रहे।

इतिहासकार गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार बोहरा गत (रूपयों का लेनदेन) और व्यापार करते थे। पाली से विराणा (चौहटन के समीप) जाना बताया है। वि.सं. 1515 में जोधपुर नरेश जोधाजी ने उन्हें 'बोहरा' पद देकर महत्त्वपूर्ण स्थान राज्य में दिया। गुजरात के सिद्धपुर के

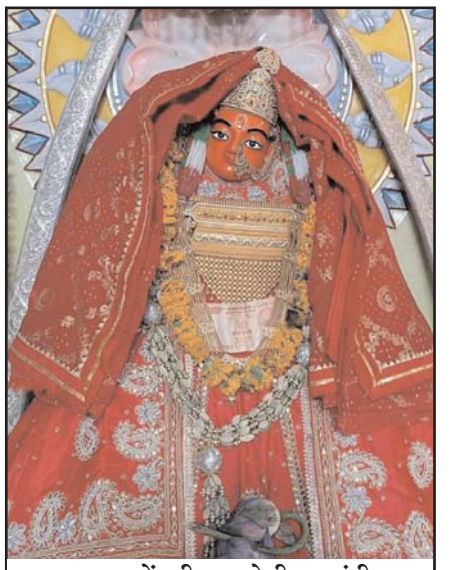

नन्दवानों की कुलदेवी वक्रांगी

राजा ने सं. 1035 में यज्ञ किया तो ये उनके प्रमुख थे। अमरकोट, सिद्धपुर, अंजार, भुज, जैसलमेर, पाली में घूमते रहे। जैसलमेर के जैसल राव ने 1212 में चुंगी माफ कर दी। माहेश्वरी, ओसवाल, पालीवाल आदि भी नन्दवाणा लगाने लगे।

नन्दवानों की कुलदेवी वक्रांगी है। विकरांगी, हंसासुर मर्दिनी, हिंगलाज माता आदि नाम से प्रसिद्ध है। टेढ़ा मुंह होने से वक्रांगी या विकरांगी कहते हैं। यह अम्बा, दुर्गा ही है। इसका प्रमुख मन्दिर चौहटन (जिला बाड़मेर) के पास लगभग 12 किलोमीटर दूर वीरात्रा धाम में है। गढ़ मन्दिर पर्वत पर है जिस पर लगभग 1250 सीढ़ियां चढ़कर जाते हैं। यहां पहले बस्ती थी।

मेवाड़-मालवा आदि में विवाह पर सात फेरे एक साथ हो जाते हैं। बारात का स्वागत, विवाह संस्कार तथा विदाई लगभग दो दिनों में होती है। परन्तु अन्यत्र हाड़ौती, ढूंढार, मारवाड़, गुजरात आदि स्थानों में विवाह में फेरे अग्नि के सामने चार तथा दूसरे दिन जल के साथ तीन होते हैं। अग्नि के फेरे के समय भी दुल्हन के माता-पिता साथ नहीं बैठते। हवन व कन्यादान के पश्चात उन्हें हटा दिया जाता है। दूसरे दिन शेष तीन फेरे होते हैं। पहले नदी किनारे या कुए के पास होते थे परन्तु अब विवाह स्थल पर ही होते हैं। पानी को सूपड़े में डालते हुए फैंकते हैं। दूल्हे के स्वागत के समय सास नाक भी पकड़ती है।

विवाह के पश्चात पाटिया तोड़ने की परम्परा है। लकड़ी के मजबूत पाटे पर दूल्हे की मां सिर पर पूजा की थाली, नारियल, घी की कटोरी रखकर कूदती है। पाटा न टूटने पर बहिनें, भाभियां व पुरूष कोशिश करते हैं। पाटे की मजबूती हेतु उसे तेल भी पिलाया जाता है। शायद यह परंपरा मनोरंजन हेतु है। विवाह संस्कार उल्लास के साथ सम्पन्न होकर दुल्हन की विदाई होती है। यह समाज छोटा पर शिक्षित है। समाज के लोग सभी प्रान्तों में बिखरे हैं। विदेशों में भी हैं। इस प्रकार नन्दवाना बोहरा ब्राह्मण औदिच्य है और ऋषि परम्परा से गौत्र है। अवंटक (नख) क्षेत्र, गांव या पिता के आधार पर है।

डॉ. भानावत से मिले माली व खत्री

उदयपुर (ह. सं.)। यहां राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर द्वारा भारतीय लोककला मण्डल में 26-28 मई तक आयोजित नाट्य लेखन एवं निर्देशन कार्यशाला में भाग लेने आये जयपुर से बी. एल. माली 'अशान्त' तथा रमेश खत्री ने अन्तिम दिन डॉ. महेन्द्र भानावत से उनके निवास न्यू भूपालपुरा स्थित आर्ची आर्केड में भेंट की।

बी. एल. माली, डॉ. महेंद्र भानावत तथा रमेश खत्री

डॉ. भानावत ने बताया कि बी. एल. माली से उनका परिचय बीकानेर जब वे कॉलेज की पढ़ाई कर रहे थे तब सन् 1956 से है। माली ने ही सबसे पहले उनकी पुस्तक 'कंकू कन्या' का 1982 में प्रकाशन किया था। इसका प्रकाशन माली द्वारा संस्थापित राजस्थानी भाषा बालसाहित्य प्रकाशन ट्रस्ट से हुआ। कंकू कन्या में कंकू कन्या के अतिरिक्त आजादी रो उजास, चंदणा नै वन्दणा, ट्यूशन मास्टर, प्रभु पालणिये तथा कुवै में भांग नाटिकाएं हैं।

डॉ. भानावत ने बताया कि मालीजी हिन्दी तथा राजस्थानी के सधे हुए स्थापित लेखक हैं। उनके पांच नाटक तो जवाहर कला केन्द्र ने ही प्रकाशित किये। एक नाटक सुखाड़िया विवि के राजस्थानी विभाग में चल रहा है लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य इनका हिन्दी-राजस्थानी शब्दकोश के सम्पादन का है जिसमें तीन-साढ़े तीन लाख शब्द हैं। यह कार्य वे पिछले दस वर्ष से कर रहे हैं। इसका प्रकाशन राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर से पांच खण्डों में होगा।

श्री रमेश खत्री आकाशवाणी से सेवानिवृत्त सुधि साहित्यकार हैं जिन्होंने साहित्य की हर विधा में 20 के करीब प्रकाशन दिये हैं। इनका खुद का प्रकाशन व्यवसाय भी है। करीब डेढ़ घण्टे की यह मुलाकात साहित्य के अनेक सवालों के इर्दगिर्द रही। डॉ. भानावत ने खत्रीजी को उनकी चाह के अनुसार 'निर्भय मीरां' तथा अपनी ओर से 'जिन्हें मैं जानता हूं' पुस्तकें भेंट की।

शिव नारायण ज्वैलर्स ने जीते 8 गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड्स

उदयपुर (ह. सं.)। हैदराबाद के प्रतिष्ठित शिव नारायण ज्वैलर्स प्रा. लि. ने 8 गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड्स जीतकर एक असाधारण उपलब्धि हासिल की है तथा भारत के प्रतिष्ठित ज्वैलर के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को कायम रखा है। इस महत्वपूर्ण अवसर यादगार बनाने तथा शिव नारायण की समृद्ध विरासत का सम्मान करने के लिए हैदराबाद के ताज फालकनुमा पैलेस में एक भव्य समारोह आयोजित किया गया था।

प्रबन्ध निदेशक तुषार अग्रवाल ने कहा कि कार्यक्रम में बॉलीवुड की फैशन आइकन, दिशा पटानी (एमएस धोनी: अनटोल्ड स्टोरी फेम) सहित सम्मानित गणमान्य व्यक्तियों और प्रसिद्ध हस्तियां उपस्थिति रहीं, जो शिव नारायण के हाई ज्वैलरी पीसेज में सजी रैंप पर ले गए। शाम का एक और मुख्य आकर्षण एक्सपीरियन्टल जोन था, जो रिकॉर्ड-ब्रेकिंग गहने दिखाने वाला आकर्षक अनुभव पेश कर रहा था।

रेत के झूंपों में संगीत की स्वर लहरियां देते वादक (2)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

सिंधी सारंगी :

रेगिस्तान की धरती यों तो अभावों की धरती कही जाती है जहां पानी का अभाव-ही-अभाव मिलता है। इससे वहां की फसलें भी उतनी लहलही और हरापन लिए नहीं होतीं। 'पानी गये न उबरे, मोती मानस चून' के अनुसार पानी के लाले सर्व दुखदायी हैं तथापि वहां की प्रकृति एक भिन्न रूप में अधिक मेहरबान है और वह उपहार है संगीत का, स्वर का, राग-रागिनी का, साजबाज का।

दूर-सुदूर फैले झूंपों में कहीं कोई विरानी नहीं है। इत्र की भिनी-भिनी खुशबू की तरह स्वरों का सुमधुर लालित्य अपने होले-होले सौन्दर्य की गहरी गूंज दिये मोहता मिलेगा। कण्ठों से निकले सुरों का गंगा-जमनी आरोह-अवरोह लम्बी-लम्बी तान लिए मीलों तक कर्णप्रिय मिठास की कूक दिये रात्रि के सन्नाटे में भी हालरहुलर लेती धमकमूसल देता जागरण का शंख फूंकता मिलेगा।

वहां पानी का समुद्र तो नहीं है पर रेत का समंदर तो है जिसकी रेतीली लहरें पानी की लहर मुजब एक-के-बाद एक उठती इठलाती हैं। वे स्वतंत्र होती हुई भी उस रेतीले भण्डारे से आबद्ध हैं और फिर ऊपर से हवा के शतंरगी रेले एक नया ही मृदुल पराक्रम देते हैं। यही कारण है कि वहां तार और फूंक वाद्यों ने अपना साम्राज्य बसाया। रेत की ऐसी परतें और हवा के ऐसे रेले अन्यत्र नहीं, यहीं मिलेंगे। उसी तरह जो तार वाद्य और फूंक वाद्य यहां आ जन्में हैं वे यहीं मिलेंगे।

भपंग वादन के जहूरखां तथा भूंगरखां, खड़ताल वादन के सद्दीकखां, नड़ वादन के करणा भील, सुरणाई वादन के पेपेखां जैसे और भी अनेक खां और मोहम्मद हैं जिन्होंने अपने झूंपों से बाहर झांक दुनिया जगाई है। नूर मोहम्मद लंगा इनमें वह मशाल बने जिनके सहारे और भी कई मशालें प्रज्वलित हो मिसाल बन गई।

इन्हीं खांओं में से चिम्मेखां ने सारंगी के साथ बचपन से बुढ़ापा तक की यात्रा कर अंगूर से दाख का सफर कर अपनी पारम्परिक विरासत को विस्तृत नभ दिया। तीस तारों और सात स्वरों वाली सारंगी सिंध में विकसित होने के कारण 'सिंधी सारंगी' नाम धर पाई।

अपने पिता का साथ देती यह सारंगी चिम्मेखां का भी उसी जतन जाब्ते के साथ दे रही है तो ये भी उसे उसी तरह कशीदादार थैली में, कंगारू जैसे अपने लाल को सुरक्षित किए रहते हैं। तारों के ऊपर धनुषाकार गज घुमाते सर्र से जो सुर-स्वर-ध्वनि निकाली जाती है उसे ये 'गजी' कहते हैं। धनुषाकार लकड़ी घोड़े के बालों से बनी तनी रहती है। उसी से ये अपने हाथ की रेशमाई से जो रगड़-सहलाई देते हैं, उस नाद-सौन्दर्य की गहरी गमक से श्रोता उनके साथ उन अनेक दुनियां के संगीत की गीतिका में पहुंच जायेंगे जिसकी कल्पना उसमें खोजने पर ही गूंगे का गुड़ खिलाती है।

टोडी, भैरवी, मारवी रागों के अलावा अनेक रागें सारंगी पर शोभित हैं। शास्त्रीय रागें तो इनकी आस्तीन भी नहीं छू पाती हैं। अपनी श्वेत सुलझे बालों की रोशनाई लिए चिम्मेखां अपना दर्दीला दुखड़ा व्यक्त किये बिना नहीं रह पाते। वे वहां कलक्टर रहे ललित के पंवार को याद करते अपनी आंखों में तरुणाई का तेज भरते कहते हैं, भला हो उनका जिन्होंने हमारा दर्द समझा और नि:शुल्क भू आवंटन कर लोककलाकारों की कोलोनी बसाई बाकी तो जहां-जहां भी जाने का अवसर मिलता है वहां तालियां तो बहुत मिलती हैं पर उनसे पेट थोड़ ही भरता है।

जोगिया सारंगी :

सारंगी का एक रूप जोगिया सारंगी होता है जिसे जोगी बजाते हैं। ये नाथ सम्प्रदाय से जुड़े होते हैं। सारंगी बजाने वाला प्रमुखत: शिवजी का ब्यावला, गोपीचन्द भरथरी, निहालदे सुलतान की लम्बी गाथा गाकर श्रोताओं को

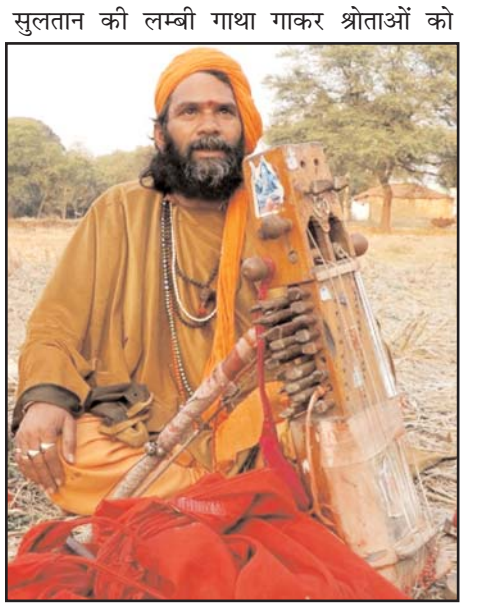

रस-विभोर कर देता है। यह सारंगी शान्तरस स्वर लिए बड़ी मधुर ध्वनि लिए होती है जिससे आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति भी होती है।

-क्रमश:

वल्लकी वीणा वादिका मेवाड़ कुंवरी रमाबाई

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' -

बेटियों, बहुओं और रानियों का इतिहास अपेक्षाकृत कम ही सामने आया है। भारत के गौरवशाली, मध्यकालीन शासक मेवाड़ महाराणा कुम्भा (1433-68 ई.) की पुत्री रमाबाई के बारे में बहुत अल्प जानकारी है किन्तु जब उसकी लिखवाई जावर नगरी की सुन्दर और सुविस्तृत प्रशस्ति का अनुवाद किया तो विदित हुआ कि वह अपने दौर की महान तपस्वी रहीं। शिव और विष्णु की उपासिका ही नहीं, भक्तिसंगीत की साधिका भी थी। इतिहासकारों का ध्यान उसके अवदान की ओर कम ही गया।

जिंक के उत्पादन के लिए मशहूर जावर (जिला उदयपुर) और कुम्भलगढ़ में उसने भगवान दामोदर राय के मन्दिर बनवाए और जनहित के लिए कुण्ड का निर्माण करवाया था। जावर के मन्दिर और कुण्ड का मुहूर्त चैत्र शुक्ला सप्तमी, रविवार, विक्रम संवत् 1554 को हुआ था। इसकी प्रतिष्ठा के अवसर पर अनेक विद्वानों ने भाग लिया जिनको स्वर्ण मुद्रा सहित दुकूलों का वितरण किया गया था। यह उत्सव बहुत ही भव्य हुआ था। इसमें मेवाड़ ही नहीं, जहां कहीं जिनको भी इस उत्सव की जानकारी मिली, वहां से याचक, विद्वान आदि जावर आए और महोत्सव के अंग बने।

इसकी प्रशस्ति उस काल के महान्यायविद महेश्वर दशोरा ने लिखी थी जो करीब चालीस श्लोकों वाली है। उसमें रमाबाई के बारे में पर्याप्त जानकारियां मिलती हैं। रमाबाई का विवाह जूनागढ़ के यादव शासक मण्डलीक के साथ हुआ था।

मण्डलीक अपनी कलाओं और दान-धर्म के लिए ख्यातिलब्ध था, हालांकि वह बाद में महमूद बेगड़ा के आक्रमण से पराजित हो गया था। महेश्वर कवि ने इस प्रशस्ति में 'मण्डलीक प्रबन्ध' के रूप में काव्य लिखा है। मण्डलीक के जूनागढ़ (जीर्ण प्राकार) का वर्णन इतने सुन्दर ढंग से किया गया है कि वहां पर अनेक उच्च कुलों में उत्पन्न लोगों का निवास था और संगीत-सौंदर्य की जानकार सुन्दरियां रहती थी। वहां दान की ख्याति इतनी थी कि मण्डलीक का महल देवताओं के निवास सुमेरु की तरह विख्यात हो चुका था।

रमाबाई के लिए प्रशस्ति में कहा गया है कि वह ब्रह्मा और कुम्भा द्वारा प्रवर्तित संगीत के पुनरुद्धार में लगी हई थी। शिव और विष्णु की साधना में वह जब-तब 'वल्लकी' नामक वीणा को धारण करके नाद के आनन्द में खो जाती थी। वल्लकी वीणा का उल्लेख महाराणा कुम्भा ने अपने संगीतराज में तो किया है ही (वाद्य रत्न कोश), माघ ने शिशुपाल वध में भी किया है। यह सात तारों वाली वीणा थी। हरिवंश के विष्णुपर्व में कहा गया है कि नारद उस पर सातों स्वरों को मूर्च्छनाओं के साथ साधा करते थे।

रमाबाई ने इसी वीणा को अपने संगीताभ्यास का उपकरण बनाया, कुम्भा स्वयं वीणा वादक थे। पिता से पुत्री को भी यह विद्या सुलभ हुई। कुम्भा ने संगीतराज ने भी इस वीणा को बनाने और उसके अभ्यास का वर्णन भी किया है जो संगीत रत्नाकर या मानसोल्लास के विवरण से प्रेरित है।

रमाबाई ने जावर की इन नव निर्मितियों का जैसा वर्णन करवाया, उसे पढ़कर लगता है कि उस काल में बेटियां अपने पीहर में बड़े निर्माण में रुचि लेती थीं। इस काल में प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर महाकाव्य भी रचे जा रहे थे।

पत्रों के आलोक में (7)

जयप्रकाश भारती, नई दिल्ली के पत्र

जयप्रकाश भारती ने बालकों के मासिक पत्र 'नन्दन' के सम्पादक के रूप में बड़ी ख्याति अर्जित की। बालकों के लिए प्रकाशित होने वाले अन्य पत्रों से भिन्न इसकी पहचान छोटी-छोटी शिक्षाप्रद नैतिक जीवन निर्माण की कहानियों के कारण बड़ों में भी यह पत्रिका लोकप्रियता लिए थी। मैंने भी इसमें लिखा है और उसके बल पर भारतीजी से मेरा सुखद परिचय हो गया।

एकबार हम भीलवाड़ा एक संगोष्ठी में मिले तो मैंने और उन्होंने भीलवाड़ा शहर की तांगे में बैठकर यादगार सैर की। वे बोले कि दिल्ली में रहते यांत्रिक वाहनों की सवारी से परेशान हो गया हूं अतः यहां तांगे में थोड़ा सैर सपाटा करलें तो मन हल्का और चंगा हो जायगा।

हिन्दुस्तान टाइम्स ग्रुप से नन्दन के अतिरिक्त साप्ताहिक हिन्दुस्तान तथा दैनिक हिन्दुस्तान भी नियमित प्रकाशित होते थे। मैं इनमें भी खूब छपा। दैनिक हिन्दुस्तान का तो मैं कोई 25 वर्ष तक संवाददाता भी रहा। यह दायित्व मुझे सेंतमेंत में ही मिल गया केवल उसमें लिखने-छपने के कारण।

जब मैंने कठपुतली पर भारतीय लोक कलामण्डल के संस्थापक देवीलालजी सामर की बालोपयोगी पुस्तक छापने को भारतीजी को लिखा और साथ में उसके कुछ मुद्रित फर्मे भेजे तो उन्हें पढ़कर उन्होंने जो प्रतिक्रिया भेजी उनके कुछ अंश यहां द्रष्टव्य हैं-

''राजस्थान के गांव-गांव में और हर घर में लोककला और लोकसाहित्य की स्पंदनपूर्ण थाती के दर्शन होते हैं। उसे संजोने और सुख लूटने के अनेक प्रयास हो रहे हैं। यों कहना सर्वथा समीचीन होगा कि लोक-संस्कृति के अध्ययन एवं शोध की दिशा में राजस्थान काफी आगे निकल गया है। राजस्थान में लोककला मण्डल इस क्षेत्र की अग्रणी संस्था है। बहुमुखी लोक-प्रवृत्तियों के कारण इसे शीर्षस्थ स्थान प्राप्त हो गया है।

सामरजी का प्रिय विषय है- कठपुतलियां। उनकी पुतलियां देश के कोने-कोने में पहुंच चुकी हैं। इतना ही नहीं, देश के बाहर भी अनेक देशों में अपना कमाल दिखा रही हैं। सामरजी ने पुतलियों के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन-मनन करके, तरह-तरह से उसकी साज-सज्जा में सुधार करके, उनकी इन्द्रधनुषी छविक को उजागर कर दिया है।

हमारे देश में पुतलियां बनाने और उन्हें नचाने का प्रचलन बहुत प्राचीन काल से रहा है लेकिन आधुनिक सभ्य समाज में पुतलीकला को प्रतिष्ठित करने का श्रेय सामरजी को है। उनकी पुतलियां केवल मनोरंजन ही नहीं करतीं, समाज-शिक्षण भी करती हैं। वे जीती-जागती कलाकार हैं, निर्जीव नहीं हैं।

शालाओं के अलावा अनौपचारिक शिक्षा और प्रौढ़शिक्षा में पुतलियां तरह-तरह से उपयोगी सिद्ध होती हैं। इस क्षेत्र में कार्यकर्त्ताओं, शिक्षकों और समाजसेवियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। बच्चों की दुनिया में खुशियां बिखेरने वाले आचार्य के रूप में सामरजी का मैं अभिनन्दन करता हूं।''

दैनिक हिन्दुतान के सम्पादक शोभालाल गुप्त स्वतंत्रता सेनानी थे और खद्दर पहनते थे। जब सामरजी विदेश गये तो मैं भी उनके साथ दिल्ली में उनसे मिलने गया। वे राजस्थान के ही थे। बाद में तो जब-जब भी वे उदयपुर आये, कनक मधुकर के घर ही कभी खुद उन्होंने मुझे याद किया तो कभी मधुकरजी ने फोन कर मेरी भेंट कराई। गुप्तजी ने मेरे लेखन को कई बार छापा। खासतौर से उसमें प्रकाशित होने वाली 'व्यक्ति : साहित्य और समस्याएं।' मेरे से उन्होंने उदयपुर के देवीलाल सामर, गोवर्द्धनलाल जोशी, नाथूसिंह महियारिया, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, तुलसीनाथ धायभाई, अगरचन्द नाहटा, नरोत्तमदास स्वामी, स्वरूप व्यास जैसों पर लिखा।

इसी प्रकार साप्ताहिक हिन्दुस्तान में जब शीला झुनझुनवाला सम्पादिका थी तब 'हम हैं कुंवारे जायें किसके द्वारे' कुंवारों से सम्बन्धित परिचर्चा तथा 'देशनोक की करणी माता के चूहों के रहस्य' लेख बड़े चर्चित रहे।

- म. भा.

बाजार / समाचार

आकाश बायजूस ने राजस्थान में हिंदी माध्यम पाठ्यक्रम शुरू किया

उदयपुर (ह. सं.)। अध्ययन की निरंतरता को सुविधाजनक बनाने और अधिक से अधिक छात्रों को डॉक्टर और इंजीनियर बनने के अपने सपने को साकार करने में मदद करने, परीक्षा तैयारी सेवाओं में भारत के अग्रणी, आकाश बायजूस ने राजस्थान राज्य बोर्ड के छात्रों के लिए हिंदी माध्यम के बैच पेश किए हैं। पाठ्यक्रम का शुभारंभ शुक्रवार को उपनिदेशक मुकेशकुमार उपाध्याय ने अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ किया।

मुकेशकुमार उपाध्याय ने बताया कि सीबीएसई से संबद्ध स्कूली छात्रों के लिए डिजाइन किए गए अंग्रेजी माध्यम के पाठ्यक्रम के अलावा राज्य बोर्डों के छात्रों को क्षेत्रीय भाषाओं में एनईईटी और जेईई के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए नए हिंदी माध्यम के पाठ्यक्रमों की शुरुआत आकाश बायजू के दृष्टिकोण का एक हिस्सा है। कार्यक्रम का उद्देश्य बोर्ड और प्रतियोगी परीक्षाओं दोनों की तैयारी कर रहे छात्रों को एक एकीकृत सीखने का अनुभव प्रदान करना है।

उन्होंने बताया कि नई पहल की कुछ विशेषताएं हैं। राजस्थान राज्य शिक्षा बोर्ड के दिशा-निर्देशों के अनुरूप सावधानीपूर्वक पाठ्यक्रम तैयार किया जाएगा। हिंदी भाषा में शिक्षण प्रदान किया जाएगा जिससे उम्मीदवारों को सफलता प्राप्त करने में मदद मिलेगी। उच्च गुणवत्ता वाली अध्ययन सामग्री कक्षा 11 और कक्षा 12 के पूरे पाठ्यक्रम को कवर करेगी, जिससे छात्र राजस्थान राज्य शिक्षा बोर्ड और एनईईटी और जेईई जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल हो सकेंगे। एनईईटी उम्मीदवारों को भौतिकी, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और जूलॉजी जैसे विषयों में अध्ययन सामग्री प्राप्त होगी, जबकि जेईई उम्मीदवारों को भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित जैसे विषयों में अध्ययन सामग्री प्राप्त होगी। ये अध्ययन सामग्री ठीक वैसी ही होगी जैसी अंग्रेजी माध्यम के छात्रों को प्रदान की जाती है लेकिन हिंदी भाषा में अनुवादित की जाती है। छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप राजस्थान राज्य शिक्षा बोर्ड के छात्रों के लिए हिंदी माध्यम के अलग-अलग बैच आयोजित किए जाएंगे। स्कूली बोर्ड परीक्षाओं के साथ-साथ प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में छात्रों की मदद करने के लिए, आकाश बायजूस ने अत्यधिक आकर्षक द्विभाषी परीक्षा पत्रों (अंग्रेजी + हिंदी) की एक श्रृंखला बनाई है।

आकाश बायजूस के रीजनल डायरेक्टर परमेश्वर झा ने कहा कि हमें राजस्थान में हिंदी माध्यम की कोचिंग शुरू करने में खुशी हो रही है। हमारे 'स्टूडेंट्स फर्स्ट' दृष्टिकोण के साथ, हिंदी माध्यम के बैच उन छात्रों के लिए वरदान साबित होंगे जो प्रतियोगी परीक्षाओं में अपनी क्षमता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहते हैं।

खान का कथा-लेखन अविस्मरणीय : प्रो. वजाहत

उदयपुर (ह. सं.)। अपने लोगों की स्मृतियों को बचाना आवश्यक कार्य है क्योंकि इससे न केवल हम

अपनी परंपरा को सुरक्षित रख पाते हैं बल्कि हमें आगे सही रास्ता खोजने में भी मदद मिलती है। राजनेता जहां जनता से शक्ति लेते हैं वहीं लेखक जनता को शक्ति प्रदान करते हैं। हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. असग़र वजाहत ने आलमशाह खान की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि खान की कहानियां खुले अंत वाली होती हैं जो पाठकों को मजबूत बनाती हैं। उन्होंने खान की प्रतिनिधि कहानियों की चर्चा करते हुए बताया कि अपने खास अंदाज के कारण खान अविस्मरणीय हैं। वजाहत ने इस अवसर पर आलमशाह खान पर केंद्रित एक वेबसाइट का लोकार्पण भी किया।

व्यंग्यकार फारुक आफरीदी ने कहा कि डॉ. आलमशाह खान समाज के गरीब, पिछड़े, मजदूर और महिला वर्ग की चिंताओं और तकलीफों के चितेरे कथाकार थे। उन्होंने मानव अधिकारों के हनन को लेकर अपनी कहानियाँ लिखी और मजलूम, बेजूबान और हाशिये के समाज के पक्ष में खड़े होने का साहस दिखाया।

डॉ. सत्यनारायण व्यास ने कहा कि खान का कबीराना अंदाज गजब का था। वे स्पष्टवादी एवं निर्भीकता के प्रतीक थे। उनके चरित्र में दोहरापन नहीं था। वे विद्रोही प्रवृति के लेखक थे।

राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण ने कहा कि अकादमी अगले वर्ष प्रो. आलमशाह खान के सम्मान में दो दिवसीय आयोजन करेगी। प्रबोधकुमार गोविल, गोविंद माथुर, डॉ. सरवत खान, किशन दाधीच, प्रो. माधव हाड़ा, पल्लव तथा लईक हुसैन ने खान की कहानियों के वैशिष्ट्य को रेखांकित किया।

युवा रंगकर्मी सुनील टाक ने खान की कहानियों के नाट्य रूपांतरण एवं लघु फिल्म निर्माण की संभावनाओं की चर्चा की। संचालन प्रो. हेमेंद्र चंडालिया ने किया। डॉ. तबस्सुम खान एवं आबिद अदीब ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

- तराना परवीन

इंटरनेशनल ओलिंपियाड में उदयपुर के छात्रों का परचम

उदयपुर (ह. सं.)। विश्व के सबसे बड़े ओलिंपियाड, साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन द्वारा आयोजित इंटरनेशनल ओलिंपियाड 2022 -23 में उदयपुर के छात्रों ने इंटरनेशनल ओलंपियाड परीक्षा में इंटरनेशनल रैंक हासिल की है। इंटरनेशनल सोशल स्टडीज ओलिंपियाड में विट्टी इंटरनेशनल स्कूल उदयपुर की कक्षा 3 की छात्रा प्रिशा गुप्ता और कक्षा 4 के छात्र शिवांश पुनिया को रैंक तीन मिला। दिल्ली पब्लिक स्कूल उदयपुर के कक्षा 5 के छात्र रेयांश जैन को इंटरनेशनल मैथमैटिक ओलिंपियाड में रैंक 2 हासिल हुई।

एसओएफ के संस्थापक एवं एज्जीक्यूटिव डायरेक्टर महाबीर सिंह ने बताया कि एसओऍफ़ ओलिंपियाड परीक्षा 2022 -23 में 70 देशों के सत्तर हज़ार स्कूलों से करीब 60 लाख छात्र शामिल हुए जिसमें उदयपुर से 50 हज़ार छात्रों ने भाग लिया। इसमे सेंट्रल पब्लिक स्कूल, दिल्ली पब्लिक स्कूल, संत मैरी कॉन्वेंट और एम.डी.एस. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय आदि शामिल रहे। कार्यक्रम में पूर्व मुख्य न्यायाधीश सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ इंडिया जस्टिस दीपक मिश्रा मौजूद थे। अवार्ड्स कार्यक्रम में 198 इंटरनेशनल रैंक होल्डर छात्रों को अवार्ड्स से नवाज़ा गया। इसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इंटरनेशनल रैंक एक पाने वाले 66 छात्रों को गोल्ड मेडल एवं 50-50 हज़ार की राशि, दूसरा स्थान हासिल करने वाले 66 छात्रों को सिल्वर मेडल और 25-25 हज़ार की राशि और तीसरा स्थान हासिल करने वाले 66 छात्रों को ब्रोंज मेडल और 10-10 हज़ार की राशि से सम्मानित किया गया।

ठाकुर ग्लोबल बिज़नेस स्कूल ने आवेदन मांगे

उदयपुर (ह. सं.)। ठाकुर ग्लोबल बिज़नेस स्कूल, कांदिवली की ओर से पोस्ट ग्रैज्युएट डिप्लोमा इन मैनेजमेंट (पीजीडीएम) इस कार्यक्रम के साल 2023-24 के प्रवेश हेतु प्रक्रिया की शुरुआत करने की घोषणा की गई है। संचालिका डॉ. सूची गौतम ने कहा कि उम्मीदवार ऑनलाईन आवेदन कर सकते है। प्रवेश के लिए हेल्पलाईन नंबर्स 9819755301 या (022) - 6730 8201 / 8202 / 8208 है। काऊन्सेलिंग सोमवार से शनिवार सुबह 10 से शाम 5.30 तक उपलब्ध होगा। ठाकुर ग्लोबल बिज़नेस स्कूल ने हरदम भविष्य में नेताओं का सक्षम समाज बनाने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने पर जोर दिया है। इस कार्यक्रम का डिज़ाईन व्यावसायिकता की नींव मजबूत करते हुए मार्केटिंग, फाईनान्स, ह्युमन रिसोर्स और ऑपरेशन्स मैनेजमेंट जैसे क्षेत्र में विशेष प्राविण्य प्राप्त करने हेतु किया गया है।

जेके टायर को 22 प्रतिशत का शुद्ध लाभ

उदयपुर (ह. सं.)। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. ने वित्तीय वर्ष 23 के लिए अपने वार्षिक अंकेक्षित वित्तीय परिणामों की घोषणा की है । बोर्ड ने 100 प्रतिशत की दर से लाभांश की सिफारिश की (2 रु. प्रति शेयर जिसका अंकित मूल्य 2 रु. है)।

डॉ. रघुपति सिंघानिया, चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर (सीएमडी) ने कहा कि जेके टायर ने वित्त वर्ष 2023 के दौरान अब तक का सर्वाधिक 14,681 करोड़ रुपये का राजस्व हासिल किया है जो 22 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। वित्त वर्ष 2023 में कंपनी ने 1134 करोड़ रुपये का एबिडिटा, 411 करोड़ रुपये का कर पूर्व लाभ एवं 263 करोड़ रुपये का कर पश्चात लाभ अर्जित किया है। इसका मुख्य कारण घरेलू मांग में वृद्धि होना है।

मेगा कार लोन मेले का शुभारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने मध्य भारत और महाराष्ट्र में मेगा कार लोन मेला शुरू करने की घोषणा की। राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तरी महाराष्ट्र और विदर्भ में 650 से अधिक बैंक शाखाएं प्रमुख ऑटोमोबाइल ब्रांडों और कार डीलरशिप के साथ साझेदारी में 2 और 3 जून को कार लोन अभियान की मेजबानी करेंगी। कार डीलर अपने ऑटोमोबाइल मॉडल दिखाने के लिए एचडीएफसी बैंक की शाखाओं में मौजूद रहेंगे और ग्राहकों को वाहनों की टेस्ट ड्राइव लेने की सुविधा देंगे। बैंक पात्र ग्राहकों को ऑन-द-स्पॉट कार लोन की स्वीकृति प्रदान करेगा। एचडीएफसी बैंक सभी ग्राहकों को सस्ती ब्याज दरों पर ऋण प्रदान करता है। कार-लोन मेला का लक्ष्य ग्राहकों को ऑटोमोबाइल फाइनेंस तक आसान पहुंच प्रदान करने के लिए की गई है।

एक्सीलेंस फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट अवार्ड

चित्तौड़गढ़ (ह. सं.)। भारत की प्रमुख सीमेंट और रेडी मिक्स्ड कॉंक्रीट (आरएमसी) कंपनी अल्ट्राटेक सीमेंट लि. की राजस्थान स्थित यूनिट आदित्य सीमेंट वर्क्स को 17वें सीआईआई - आईटीसी सस्टेनेबिलिटी अवार्ड्स 2022 में एक्सीलेंस फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट (मेन्युफेक्चरिंग) के अवार्ड से सम्मानित किया गया। आदित्य सीमेंट वर्क्स की नीतियों, कार्यशैली और परिणामों ने उन्हें 50 करोड़ रुपये से 499 करोड़ रुपये के टर्नओवर करने वाली कंपनियों की श्रेणी में यह सम्मान दिलाया। पर्यावरण प्रबंधन के क्षेत्र में यूनिट द्वारा किए गए सतत व्यवसाय में बेहतरी के अपने प्रयासों और व्यवसाय में श्रेष्ठता से सतत समावेशी बनने के तरीकों की खोज करने के लिए उन्हें इस अवार्ड से सम्मानित किया गया। भारत में विभिन्न क्षेत्रों से कुल 27 मेन्युफेक्चरिंग यूनिट्स अंतिम दौर के लिए चयनित हुई थीं, जिनमें से आठ को विजेता घोषित किया गया और आदित्य सीमेंट वर्क्स सीमेंट क्षेत्र से सम्मानित होने वाली एकमात्र यूनिट थी।

कॉर्निया ट्रांसप्लांट का सफल ऑपरेशन

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने 75 वर्षीय रोगी की आंख में सफल कॉर्निया ट्रांसप्लांट किया है।

चित्तौड़गढ़ निवासी 75 वर्षीय मरीज को 6 माह पूर्व खेत में काम करते समय बाई आंख में चोट लग गई। इसके पश्चात उसकी आंख की रोशनी चली गई। रोगी के परिजन उन्हें कई अस्पताल लेकर गए लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। किसी परिचित की सलाह पर वे गत दिनों मरीज को लेकर गीतांजली हॉस्पिटल आए। यहां नेत्र रोग विभागाध्यक्ष सर्जन डॉ. लीपा मोहंती ने रोगी की संपूर्ण जांच कर पाया कि उसकी बाईं आंख का कॉर्निया जो सामान्यत: पारदर्शी होता है पूरी तरह सफेद हो चुका था। इस पर बाएं आंख में कॉर्निया ट्रांसप्लांट का सफल ऑपरेशन कर आंख की रोशनी वापस लौटाई। इस सफल ऑपरेशन को करने वाली टीम में डॉ. लीपा मोहंती के साथ रेजिडेंट डॉ. अभिषेक, डॉ. गोविंद व नर्स तरुणा माली का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। रोगी अब पूर्णतया स्वस्थ है।

मिनख मोल री पांच कवितावां

(डॉ. महेन्द्र भानावत की 'कोई-कोई औरत' की हिन्दी कविताओं का राजस्थानी उल्था)

(1) नेमप्लेट

पैली म्हूं-ई-म्हूं हो
अबै स्हेर पसरवा लागग्यो है
म्हनै कोई नीं जाणै
मन करै
नेमप्लेट री ठौड़ लटकजावूं।

(2) मनीप्लांट

म्हनैं खावण नै रोटलो चाहीजै
थनैं पेट भरण नै पईसो
मिनख थूं भी है अर म्हूं भी
सगळा पेट खातर करै
पेट पापी वाजै
पण थारो पेट तजोरी बणग्यो है
पईसा स्यूं पईसो वधै
म्हनैं ठा है
म्हूं रोटी स्यूं रोटी रो वधापो चावूं
मलीप्लांट म्हैं भी लगा राख्यो है
पण वो चोर्‌योड़ो नीं है
इण खातर ना फूलै ना फलै
पण सगळा नै राखै भलै।

(3) घरबार

रूंख कटै ज्यूं घरबार कटै
थनैं कई ठा!
कित्तौ फैल्योड़ो हो
म्हारे घर आंगणा मांय
घेरघुमेर च्यारूंमेर
बड़ल्या रो रूंख।
थनैं कई ठा!
उनैं काट नैं
कित्ती हत्या मोल लीवी
कित्तो पछतावो करणो पड़सी थनैं
इण पाप रो सराप झेलणो पड़सी।
थनैं कई ठा!

ओ रूंख मातर रूंख नी है
म्हारी केई पींड्या रो लेखो राखै है
दादा दूध दई सूं सींचण करता
दादी पूजा पाठ कर सवाग लेती
पूरवज पुण्ण लीधा
नाम कीधा।
थनैं कई ठा!
ज्यूं-ज्यूं बड़ल्यो फूलै
त्यूं-त्यूं घरबार फलीभूत वै
थाळी जेड़ा मोटा पानड़ा हा ईं रै
हंदूर हरीखी हंदराई कूंपळां ही
ईंपरळी होना री छाल
नख स्यूं उतारी जारती
बड़ल्यो दूधड़लो देतो
पूतड़लो देतो
हपूत हो वो।
थनैं कई ठा!
रूंखड़ो कटै
जाणे घरबार कटै
आपणी आंगळी तो काट नै देख
कित्ता रो आसरो वै रूंख
घरबार परवार रो
जीवण सेंसार रो
स्हाय वै रूंख
थनैं कई ठा!!

(4) बंटवारो

थां तीन भाई
तीनई बैन्या नै बांटलीवी
चोखो कीधो।
जुदा-जुदा लेजदेज
कांचळी कापड़ो
मौसर मायरो
हालेबाले
चोखो कीधो!
देस अर रास्ट्र बंटरिया है
मिनख अर मिनखाचारो बंटरियो है
थीं तो बैन्यां बांटी है फकत
वीं तो मावड़ अर बावड़ नै तगात
बांटलीना
आपणी-आपणी तमाखु
अर आपणी-आपणी चिलम भर पीवो
सवा बीसी स्यूं लैर
सवा सौ बरसां री जीवणी जीवो।

(5) चीड़ो अर म्हूं

अणा दावड़े
मुं' झांकतै
एक चीड़ी चेहकै
वींरी चैहक मांय
भारीपणो लागै।
चीड़ो काच माथै
चोंचड़ी मार
आपणो उणियारो निरखै हो।
दोई धणी लुगाई
चुग्गा री ठौड़
नुवो आवण आल़ो सुग्गो खातर
जापो जणवा री जग्यां सोध रिया है।
म्हारे दरीखाना मांय
घड़ी-घड़ी आवै-जावै
आपणी चोंचड़्यां मांय
भारा-चारा रा तरकल्या
घासफूस त्रिण तागा
बटोर लावै।
हूं वारी चीं-चपड़ स्यूं
चीड़चीड़ो बण
वांरे औरेदौरे भागमभाग करूं
तद म्हारे माथै बकझक करण

अ.भा. साहित्य परिषद द्वारा साहित्यकारों का सम्मान

उदयपुर में 26 मई को अखिल भारतीय साहित्य परिषद् द्वारा अकादमी-पुरस्कृत साहित्यकारों का सूचना केन्द्र में सम्मान किया गया। इसमें राजस्थान साहित्य अकादमी से विशिष्ट साहित्यकार सम्मान प्राप्त डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. विद्या पालीवाल, डॉ. कुसुम मेघवाल व परदेशी पुरस्कार से पुरस्कृत सुश्री हर्षिता मीणा एवं राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के आगीवाण सम्मान से सम्मानित पुरुषोत्तम पल्लव को पगड़ी, उपरणा तथा अभिनंदन-पत्र भेंट किया गया। प्रभावी संयोजन डॉ. कुंजन आचार्य ने किया।

इस अवसर पर डॉ. देव कोठारी, डॉ. कुंदन माली, डॉ. ज्योतिपुंज, बी.एल. माली, निर्मल गर्ग, रेणु देवपुरा, सुरेंद्रसिंह राव, ममता जोशी, आशीष सिसोदिया, किरणबाला जीनगर, कपिल पालीवाल, डॉ. करूणा दशोरा, सिम्मीसिंह, चेतन औदिच्य, सोमशेखर, सुनीता निमिषसिंह, हेमंत जोशी, नीलोफर मुनीर, पूनम भू, रागिनी शर्मा, स्वाति शकुंत, दीपक शर्मा, राजकुमार राज, प्रियंका भट्ट उपस्थित रहे।

- आशा पांडे

ऋतिक रोशन मोबिल के ब्रांड एंबेसडर

उदयपुर (ह.सं.)। ल्यूब्रीकेशन टेक्नोलॉजी इनोवेशन के क्षेत्र में ग्लोबल लीडर एक्सोनमोबिल ने बॉलीवुड सुपरस्टार ऋतिक रोशन को नया ब्रांड एंबेसडर घोषित किया।

एक्सोनमोबिल ल्यूब्रीकेंट्स प्रा. लि. के सीईओ विपिन राणा ने कहा कि ऋतिक रोशन को अपने मोबिल ल्यूब्रीकेंट्स के साथ पार्टनर बनाए जाने को लेकर बहुत अधिक उत्साहित हैं। हमें भरोसा है कि उनका व्यक्तित्व ट्रेड पार्टनरों से प्रतिध्वनित होगा एवं उपभोक्ताओं में ज़बरदस्त भरोसा कायम होगा, जिससे उन्हें भारत में ल्यूब्रीकेशन की ज़रूरतों को पूरा करने की मोबिल की क्षमता में विश्वास पैदा होगा। ऋतिक रोशन ने कहा कि मैं मोबिल और इसके भरोसेमंद ब्रांड के साथ पार्टनरशिप करने के लिए बड़ा उत्सुक हूं, जिसे न केवल भारत में अपितु दुनिया भर में पहचाना जाता है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि लोगों के जीवन और समुदाय को बेहतर बनाने में चैंपियंस के प्रयासों के पीछे आत्मविश्वास ही सच्ची प्रेरक शक्ति है और वह यही मोबिल ब्रांड है।

एचडीएफसी : दो फिक्स्ड डिपॉजिट योजनाएं शुरू

उदयपुर (ह.सं.)। एचडीएफसी बैंक ने 35 और 55 महीनों दो विशेष अवधि वाली सावधि जमा (फिक्स्ड डिपॉजिट) योजनाएं शुरू की घोषणा की। विशेष अवधि फिक्स्ड डिपॉजिट योजनाओं का लाभ 2 करोड़ रुपये से कम जमा पर लिया जा सकता है। ग्राहक 35 महीने के लिए फिक्स्ड डिपॉजिट पर 7.20 प्रतिशत और 55 महीने के लिए फिक्स्ड डिपॉजिट पर 7.25 प्रतिशत ब्याज का लाभ उठा सकते हैं। इसके अलावा, वरिष्ठ नागरिक ग्राहक स्वीकृत ब्याज दर के अलावा 0.5 प्रतिशत तक अतिरिक्त ब्याज मार्जिन का लाभ उठा सकते हैं।

रवि संथानम, सीएमओ, हेड-कॉर्पोरेट कम्युनिकेशंस, हेड-लायबिलिटी प्रोडक्ट्स एंड मैनेज्ड प्रोग्राम्स ने कहा कि एचडीएफसी बैंक अपने ग्राहकों को बेहतरीन बैंकिंग अनुभव प्रदान करता है। हम ग्राहकों को सर्वश्रेष्ठ बैंकिंग और बचत समाधान प्रदान करने के लिए लगातार नए-नए प्रयोग करते रहते हैं।

उदपुरा में भंवर रणजीतसिंह का गोळ बींटी समारोह

उदयपुर (ह. सं.)। कानोड़ के पास लुणदा से एक किलोमीटर दूर उदपुरा गांव के कालाजी भेरूजी बावजी मन्दिर में 26 मई को ठा. किशनसिंहजी चौहान अपने सुपौत्र एवं कुंवर विक्रमसिंहजी चौहान के सुपुत्र भंवर रणजीतसिंह चौहान का गोळ बींटी कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सैंकड़ों लोगों की उपस्थिति रही। उदयपुर से डॉ. तुक्तक-रंजना भानावत ने भी कार्यक्रम में शिरकत कर भंवर रणजीतसिंह चौहान का शॉल, माला से अभिनन्दन किया। इस अवसर पर कुंवर विक्रमसिंहजी चौहान, उनकी धर्मपत्नी सीताकुंवर तथा पुत्री पूजाकुंवर भी उपस्थित थे।

सीताकुंवर, विक्रमसिंहजी, रणजीतसिंह, डॉ. तुक्तक, रंजना तथा पूजाकुंवर

उल्लेखनीय है कि कालाजी भेरूजी का स्थान नीम के 300 साल पुराने पेड़ के नीचे स्थित है। यह पेड़ गांव बसने से पूर्व का है। गांववालों के अनुसार इस पेड़ की हर डाली पोली है। इन 300 सालों में कितने ही तूफान आए, तेज हवाएं चलीं पर पेड़ को कुछ नहीं हुआ। नीम का पेड़ देवताओं का निवास स्थल माना जाता है। लोक में नीम के नीचे बसे देवता का चलता नाम नीमड़िया बावजी अनेक जगह प्रसिद्ध है।

गोळ बींटी तांबे की बनी होती है। अनेक जातियों में बींटी पहनाने का रिवाज है। यह लोकदेवता भेरूजी की आज्ञा से पहनी जाती है। किसी कार्य के पूर्ण हो जाने पर भी यह बींटी मनौती के रूप में पहनी जाती है। इसे गोळ धारण करना अथवा पहनना भी कहा जाता है। गोळ धारण करना अपनेआप में पूरा संस्कार है। यह पुरुष ही धारण करता है। इसे धारण करने पर कुछ नियमों का कड़ाई से पालन किया जाता है। जैसे आजीवन शराब-मांस का परित्याग तथा मौतमरण वाले परिवार में जीमण निषेध रहता है। **- डॉ. तुक्तक भानावत**

डॉ. दिलीप धींग को युगधारा सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। 'युगधारा' द्वारा 21 मई को डॉ. दिलीप धींग को 'युगधारा सम्मान' से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. देव कोठारी ने

कहा कि डॉ. धींग देश-विदेश में मेवाड़ का मान बढ़ा रहे हैं। अध्यक्षता करते हुए डॉ. कुंदनलाल कोठारी ने कहा कि डॉ. धींग तन से दुबले, लेकिन मन से सशक्त हैं। प्राकृत भाषा के प्रचार में उनका बड़ा योगदान है।

युगधारा संस्थापक डॉ. ज्योतिपुंज ने कहा कि डॉ. धींग के सम्मान से युगधारा का गौरव बढ़ा है। अध्यक्ष अशोक जैन 'मंथन' ने कहा कि डॉ. धींग ने प्रचुर लोकोपयोगी साहित्य सृजन तथा मानवीय मूल्यों व शाकाहार के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान किया है। **- डॉ. निर्मल गर्ग**

सूचना

डॉ. भानावत परिवार का नया निवास
352, श्रीकृष्णपुरा की बजाय न्यू भूपालपुरा,
राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, 904, आर्ची आर्केड है।

यात्रावृत्त : बीकानेर में बारह दिन (3)

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

बच्चों के डाक्टर प्रो. गौरीशंकर जोशी :

05 मार्च। डॉ. गौरीशंकर जोशी दो बार सपत्नी मिलने आये। इनसे डॉ. कविता- डॉ. सतीशजी का वर्षों से पारिवारिक सम्पर्क है।

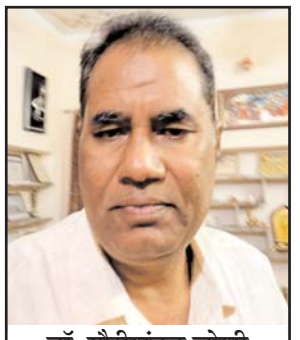

डॉ. गौरीशंकर जोशी

प्रो. जोशी यहां के राजकीय अस्पताल में चाइल्ड स्पेशलिस्ट हैं। नागौर जिले के श्रीबालाजी गांव के निवासी होने से इनका अब तक ग्रामीण परिवेशी सहज, सरल एवं स्नेहिल व्यक्तित्व है। मिलने पर किसी को यह आभास नहीं होता कि ये अपने क्षेत्र के ख्यात डाक्टर हैं।

बीकानेर से 80 किलोमीटर दूर होते हुए भी प्रत्येक रविवार को श्रीबालाजी गांव जाकर माता-पिता की कुशलक्षेमी आशिष प्राप्त करते गांव वालों की खुशखबरी लेते हैं और रोगग्रस्त की सहायता-सेवा कर धन्य होते हैं। गम्भीर रोगी को बीकानेर बुलाकर पुख्ता इलाज कराते हैं।

यही नहीं वे बताते हैं कि 12 वर्ष उनकी पोस्टिंग हिम्मतसर गांव में रही। वहां आज भी समय निकालकर लोगों की कुशलक्षेम पूछने जाते हैं। उनकी इस तरह की सेवा भावना देखते मुझे डॉ. आर. के. अग्रवाल की स्मृति हो आई। मैंने डॉ. जोशी से जिक्र भी किया कि बीकानेर में उनकी इतनी लोकप्रियता रही कि उन्हें देवपुरुष ही कहने लग गये।

बीकानेर से जब डॉ. अग्रवाल उदयपुर आये तब मेरा उनसे घनिष्ट सम्पर्क रहा। एकबार जब मैं सुबह उनके निवास पर गया तो एक मरीज आया। उसे यह कहकर वे अपने स्कूटर पर बिठा अस्पताल ले गये कि यहां तुझे मेरी फीस के 50 रूपये देने पड़ेंगे, वहां तेरा इलाज मुफ्त में हो जायेगा। डॉ. जोशी से मैंने बच्चों की उन बीमारियों के सम्बन्ध में बात की जिनके स्थानीय नाम और स्थानीय घरेलू इलाज हैं। जैसे पेट की बीमारी फीया कालजा और उसे डाम यानी दग्ध चिन्ह से ठीक की जाती है।

वाइरा पड़ना यानी को'टेम यथा दिन के बारह बजे के आसपास गलत हवा में आना और झाड़ागर से ठीक होना। इस पर वे तनिक मुस्कराये और बोले कि हमारी पढ़ाई में ऐसी कोई बातें नहीं हैं। भूत-प्रेत वाली बीमारियों को भी उन्होंने सिरे से इन्कार किया पर मैंने दलील दी कि आप मेरे साथ आयें तो मैं देव-देवरों में किये जा रहे ऐसे इलाज से साक्षात्कार करवा सकता हूं।

डॉ. जोशी ने बताया कि गांवों में अब भी लोगों में अवेयरनेस की कमी है। वे परम्परा में बंधे हैं और मुफ्त टीकाकरण से भी दूर रहते हैं। मैंने यह भी कहा कि मेरे ध्यान में ऐसे कुछ प्राइवेट अस्पताल हैं जहां डिलेवरी केस बिगड़ने पर दाई की सहायता ली जाती है। इस पर डॉ. जोशी बाले कि मेरे प्रयत्नों से दाइयों के प्रशिक्षण का काम हाथ में लिया गया जो आशातीत सफल रहा। इसमें 50 डिलेवरी प्रतिमाह के हिसाब से जहां प्रत्येक डिलेवरी पर प्रत्येक दाई को 500 रूपया दिया गया वहीं इतनी ही रकम प्रसविनी महिला को भी सरकार द्वारा मुहैया कराई गई।

डिलेवरी के सम्बन्ध में मैंने उनसे सवाल किया कि पूर्ण सफल गर्भ तो नौ मास्या होता है पर कभी-कभी सात मास्या भी सफल रहता है। मैंने कहा कि मेरी मां गांव बाहर जब शौच को निकली तो उस दौरान एक गडूरे (ग्राम शूकर) ने ऐसी भेंटी दी कि मां वहीं लुढ़क गई और उसका सात मास्या गर्भ भी गिर गया।

डॉ. जोशी बोले, जुड़वा बच्चे, विकलांग बच्चे, बेमेल बच्चे, दो सिर, चार हाथ वाले बच्चे, दोनों संयुक्त बच्चे जैसे उदाहरण मिलते हैं। इनमें से कुछ का तो समय रहते इलाज सम्भव है। बाकी तो काल के गाल ही होते हैं। लेकिन उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आठ मास्ये बच्चों के जीवित रहने की कोई सम्भावना नहीं देखी गई।

इस बातचीत में डॉ. जोशीजी की सहधर्मिणी श्रीमती अनिता, मेरी आत्मजा डॉ. कविता तथा जामाता डॉ. सतीशजी मेहता ने भी सवाल-जवाबों में अपने अनुभवों की भागीदारी दी।

डॉ. गिरिजाशंकर छड़ी के सहारे :

05 मार्च। डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा भी मेरे अच्छे सहपाठी रहे। वे विस्मित हो बड़ी आत्मीयता से मिले पर छड़ी के सहारे टेके-टेके चलते देख मैं चकित रह गया कारण कि वे अपने रहन-सहन में सदैव ही 'सात्विक मन स्वस्थ तन' रहे। विरासत में विद्वता के संस्कार होने से वे बड़े विनम्र और अपने पिताश्री विद्याधरजी शास्त्री की विरासत के आदर्श सौम्य एवं संस्कारी सदाबहारी हैं। उनके अग्रज डॉ. दिवाकर शर्मा की अकस्मात मृत्यु का जिक्र हमें कुछ देर के लिए स्तब्ध किये रहा।

दिवाकरजी भी बाद में डूंगर कॉलेज में अपने पिताश्री के पाट संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे। उन्होंने राजस्थान के संस्कृत साहित्य सृजन में बीकानेर क्षेत्र का योगदान (1472-1965 ई.) पर शोधकार्य कर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इसे डॉ. गिरिजाशंकरजी ने प्रकाशित कराया और मुझे भी उसकी प्रति भेंट की। यही नहीं, उन्होंने अपने पिताश्री विद्याधरजी शास्त्री की जन्मशताब्दी पर प्रकाशित विश्वंभरा का जुलाई-सितम्बर 2001 में प्रकाशित विशेषांक दिया। डॉ. दिवाकरजी के सम्पादन में हिन्दी विश्वभारती, अनुसंधान परिषद बीकानेर की यह मुख पत्रिका है।

इस विशेषांक में डॉ. ब्रह्मानंद शर्मा ने शास्त्रीजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सटीक विश्लेषण करते लिखा, ''पं. विद्याधरजी

सन् 1957-58 में डूंगर कॉलेज के सहपाठी रहे
डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा के साथ डॉ. महेन्द्र भानावत

शास्त्री का कृतित्व उनके व्यक्तित्व से प्रेरित था तथा अपने कृतित्व में सफलता अपने व्यक्तित्व के कारण ही मिली थी। उनका बाह्य रूप उनके अन्तर का ही व्यक्त रूप था। अत: उनके व्यक्तित्व में एकरूपता थी।

इसी कारण उनके व्यक्तित्व में छद्म एवं आवरण का अभाव था तथा उसमें दर्शक को सत्य के दर्शन होते थे। अन्तर्विरोध की स्थिति में व्यक्तित्व का एक अंग दूसरे अंग के साथ संघर्षरत रहता है अत: मनुष्य की शक्ति का पर्याप्त भाग इसी संघर्ष में लग जाता है फलत: विकास की ओर उन्मुख उसकी शक्ति दुर्बल पड़ जाती है। छद्म और कपट की स्थिति में मनुष्य को तात्कालीन लाभ भले ही मिले, इससे उसके व्यक्तित्व का विकास नहीं होता। यह प्रवृत्ति समाज में सन्देह और अविश्वास की ऐसी भावना उत्पन्न करती है जिससे सामाजिकता का ह्रास होने लगता है।'' (पृ. 1)

मैं ब्रह्मानन्दजी के सम्पर्क में भी रहा। वे तब पं. विद्यानन्दजी के साथ ही संस्कृत के व्याख्याता थे। डॉ. गिरिजा ने मुझे अपने पर केन्द्रित 'इतिहास एवं संस्कृति स्पर्श बोध' ग्रंथ भी बताया। उन्हें याद आया, इसमें उन्होंने अपने संस्मरणों में मुझे भी 'भाई महेन्द्र भानावत मेरे सहपाठी' शीर्षक से याद किया जिसके प्रमुख अंश यहां द्रष्टव्य हैं-

भाई महेन्द्र भानावत, मेरे सहपाठी :

ये उन दिनों की बात है जब महेन्द्र और उनके अग्रज भाई नरेन्द्र भानावत मेवाड़ क्षेत्र से शिक्षा ग्रहण करने हेतु बीकानेर आकर यहां के प्रतिष्ठित डूंगर महाविद्यालय को अपनी डिग्री की शिक्षा हेतु माध्यम बना चुके थे। उस समय मुझे बी. ए. तक भाई महेन्द्र के साथ एक सहपाठी रहने का अवसर मिला था।

मैं देखा करता था कि उन दिनों उस महाविद्यालय में राजपूत और जाट समाज के लम्बे चौड़े शरीर वाले छात्रों का बाहुल्य था। उनमें भाई महेन्द्र भानावत, उनके अग्रज नरेन्द्र जो उनसे आगे की कक्षा में थे, अपने छोटे कद काठी के कारण उन सबमें अलग ही दिखलाई देते थे परन्तु वे अपनी वाक्शैली के कारण उन सभी छात्रों और गुरुजनों के मध्य अपनी अलग ही पहचान बनाये हुए थे।

भाई महेन्द्र अपनी कक्षा में काफी मेधावी छात्रों में गिने जाते थे। वे बीकानेर नगर के अन्दरूनी भाग में स्थित सुप्रसिद्ध भैरूंदानजी सेठिया द्वारा स्थापित साधुमार्गी समता भवन, जिसके एक भाग में सुप्रसिद्ध सेठिया पुस्तकालय विद्यमान था, में ही निवास करते थे। सेठिया पुस्तकालय की सारसंभाल भी उनके ही जिम्मे थी। वे खुद भी वहां की पुस्तकें खूब पढ़ते थे और जरूरतमन्द पाठकों को पुस्तकें उपलब्ध करवाने में मदद भी किया करते थे। वे अपने को यहीं तक सीमित नहीं रखे हुए थे अपितु उनका नगर के तत्कालीन अनेक विद्वानों यथा श्री अगरचन्दजी नाहटा, पं. नरोत्तमदासजी स्वामी व पं. विद्याधरजी शास्त्री आदि मनीषियों से भी सम्पर्क बना हुआ था।

वे उनके द्वारा आयोजित विविध प्रकार के हिन्दी, राजस्थानी और संस्कृत के साहित्यिक कार्यक्रमों में खुलकर चर्चाओं में भाग लिया करते थे। यहां उक्त बातों का उल्लेख करने का मात्र यही उद्देश्य है कि भाई महेन्द्र ने राजस्थानी की उक्ति 'पूत रा पग पालणै दीसै' को सार्थक कर दिया था।

डूंगर महाविद्यालय से बी. ए. पास कर भाई महेन्द्र ने उदयपुर को अपनी उच्च शिक्षा का केन्द्र बनाकर एम.ए. हिन्दी व पीएच.डी. की डिग्रियां प्राप्त कीं किन्तु जब उन्होंने अपनी पीएच.डी. डिग्री के लिए 'राजस्थानी लोकनाट्य परम्परा में मेवाड़ का गवरी नाट्य और उसका साहित्य' विषय पर अपना शोध प्रारम्भ किया तो एक लम्बे अन्तराल के पश्चात उनका बीकानेर में राजस्थान राज्य अभिलेखागार में विषय की सामग्री चयन के लिये अनेक बार आना हुआ। उस समय तक मैं इसी अभिलेखागार से राज्य-सेवक के रूप में जुड़ चुका था। उस दौरान उनसे अनेक बार चर्चा हुआ करती थी।

मैं देखा करता था कि सामग्री चयन के लिए वे कितनी परिश्रम करते थे, जो शोधकक्ष में बैठे अच्छे-अच्छे अध्येताओं का आदर्श बन चुका था। पीएच.डी. डिग्री प्राप्त करने के पश्चात वे जीवनयापन के लिए मेवाड़ क्षेत्र में स्थित लोककला और संस्कृति के अनेक विभागों से जुड़ते चले गए।

इसी पूरे सेवाकाल में उन्होंने अत्यन्त ही परिश्रम करते हुए लोकसाहित्य के विविध विषयों पर बहुआयामी लेखन कार्य किया। परिणामस्वरूप लोकसाहित्य, कला और उनके संरक्षण में अनेक नये मानदण्ड स्थापित करने के कारण उन्होंने भारतीय स्तर पर एक श्रेष्ठ लोकसंस्कृति के साधक के रूप में पहचान बनाने में सफलता प्राप्त की।

मेवाड़ से दूर बैठा मैं उनसे संवाद के अभाव में उनकी उक्त विद्वता को एक साधारण मित्र के रूप में ही आंकता रहा जो मेरा भ्रम ही था। राजस्थान के विभिन्न अंचलों में होने वाली राजस्थान इतिहास कांग्रेस अथवा राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में यादा-कदा उनसे मुलाकात और उनके भाषण सुनने और मिलने का अवसर अवश्य मिल जाया करता था। अब तक भाई महेन्द्र देश-विदेश में लोककला के क्षेत्र में एक बड़े आधिकारिक अध्येता और विद्वान बन चुके थे परन्तु बीकानेर में अपने पुराने सहपाठियों के मध्य वे आज भी वही भाई महेन्द्र ही हैं।

पिछले दिनों मुझे उनका एक पोस्टकार्ड मिला जिसमें उन्होंने जवाहर कला केन्द्र जयपुर से प्रकाशित मेरी पुस्तक 'बीकानेर की चित्रांकन परम्परा' पर अपनी विदुषी पुत्री (डॉ. कहानी भानावत जो उदयपुर स्थित मीरां कन्या महाविद्यालय में चित्रकला की प्रोफेसर है) के सद्विचारों से मुझे अवगत कराया। इससे मुझे उक्त विषय पर आगे कार्य करने का बड़ा सम्बल मिला।

गंगाशहर में सुधिजनों का सान्निध्य :

तुलसी समाधि में शांत स्तब्ध मौन स्मृतियों
में खोये डॉ. भानावत एवं डॉ. सतीश

07 मार्च। गंगाशहर में धार्मिक तथा आध्यात्मिक संस्थानों एवं सुधिजनों का सान्निध्य आत्मिक सुख-मंगल का सौहार्द रहा। आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान, जो तुलसी समाधि के नाम से ही अधिक जाना जाता है, का लम्बा फैला विस्तृत परिसर आचार्य तुलसी की भव्य समाधि के साथ उनका लिखित समग्र साहित्य, महत्त्वपूर्ण जीवन की आकर्षक चित्रावली, साधना कक्ष, समवसरण स्थल, विशाल पुस्तकालय सहज ही शान्त चित्त की मौन चेतना की संस्तुति देते हैं। अवकाश होने से हमारा किसी से मिलना नहीं हुआ। दिखने को सफाईकर्मी की कर्मशीलता मिली।

-क्रमश:

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।